मूल्य : 20/- पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 डाक पंजीकरण संख्या : UP/GBD- 249/2020-2022

वर्ष : ५ मार्च : २०२१, विक्रमी सम्वत् : २०७७
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२१, दयानन्दाब्द : १९७ अंक : ९

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव विशेषांक

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

शहीद सुखदेव
बलिदान : 23 मार्च

शहीद भगत सिंह
बलिदान : 23 मार्च

शहीद राजगुरु
बलिदान : 23 मार्च

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

फरीदाबाद आर्यसमाज के एक कार्यक्रम में वेद प्रवचन करते हुए आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी
साथ में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी व श्रद्धालुजन।

ओ३म्

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022
Date of Dispatch 12 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : निराले महर्षि स्वामी दयानन्द	2
2.	यशस्वी जीवन का सार	3
3.	राष्ट्रपितामह : महर्षि दयानन्द	4–5
4.	प्रेरणामयी पर्व : ऋषि बोधोत्सव	6
5.	सत्य का ग्रहण व धारण तथा असत्य का...	8–9
6.	दयानन्द–गुण–गौरवम्	10
7.	महर्षि दयानन्द सरस्वती महान समाज...	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12–13
9.	मूलशंकर से महर्षि दयानन्द	14
10.	ऋषिबोध दिवस हमें बोध प्रदान कर...	24
11.	समाचार–सूचनाएं	26
12.	सुस्वास्थ्य : मानसिक रोग का कारण...	28

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

निराले महर्षि स्वामी दयानन्द

व्यवहारिक रूप से मार्च के महीने में वसंत ऋतु का शुभ स्वरूप दिखाई देता है। प्रकृति अपने नवीन रूप में प्रकट होती है। वृक्षों पर नये पल्लव खिलते-महकते फूलों की क्यारियां, मधुमक्खी, भवरों की गुंजन प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर भी प्रकृति का प्रभाव पड़ता है। वह भी उल्लास एवं जोश से भर उठता है। इसलिए अमर बलिदानियों का प्रियरंग वासंती रंग रहा है। महर्षि दयानन्द का पदार्पण टंकारा की भूमि पर हुआ। शिवरात्रि के दिन सच्चे शिव को पाने का व्रत धारण किया। उस यात्रा में जो भी कठिनाइयां आती गयीं उसको पार करते गये। आखिरकार दुनिया के सामने परमात्मा का सत्य स्वरूप प्रकट हुआ। जब देश में लोगों ने परमात्मा को केवल व्यापार का विषय बना दिया। अरबों का खेल परमात्मा के नाम पर होता था। आज भी हो रहा है। ऐसे में ऋषि ने जिज्ञासु श्रद्धालुओं के लिए सच्चे शिव का स्वरूप प्रकट करने के लिए संसार का वृहद उपकार किया। धर्म की आड़ में चल रहे आडम्बरों एवं पाखंडों का पर्दाफाश किया। महिलाओं को वेद पढ़ने का, यज्ञ करने का अधिकार दिलाया। जाति के नाम पर हो रहे शोषण की कठोर आलोचना की। विधवा विवाह, सती प्रथा जैसी कुरीतियों को जड़ से उखाड़ दिया। गुलामी की जंजीरों मे जकड़ी भारत माता की आजादी के लिए आवाज बुलंद की। जिनके विचारों से जागृत होकर हजारों दिवाने देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े तथा अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया। शहीदे आजम भगत सिंह का पूरा परिवार महर्षि दयानन्द का शिष्य रहा। 23 मार्च को राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह ने फांसी के फंदे को चूम लिया।

महर्षि दयानन्द का भारतीय समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा जो भी उनके जीवन में आता गया उसका जीवन क्रंदन बन गया। उनके परम अनुयायी रक्त साक्षी पं. लेखराम ने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए हिन्दुओं को विधर्मियों से बचाने के लिए अपने जीवन का बलिदान दे दिया। गुरुदत्त विद्यार्थी जो विज्ञान के प्रोफेसर थे, वे परमात्मा को नहीं मानते थे, ऋषि मृत्यु के समय का नजारा देखकर गुरुदत्त विद्यार्थी का सम्पूर्ण जीवन बदल गया। उस दिवाने ने सारे सुखों को छोड़ दिया। रात-दिन केवल वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार किया। महर्षि दयानन्द का जीवन पवित्र था, महर्षि विद्वान, समाधि सिद्ध योगी, अखण्ड ब्रह्मचारी, परोपकारी, धर्मात्मा, दयालु, निर्भीक, महान तार्किक थे। उनके सम्पूर्ण गुणों को बता पाना असम्भव है, उनके उपकारों का वर्णन करना सम्भव नहीं है। महर्षि को नमन!!

ऐ दयानन्द तुम्हारी तो क्या बात है, जैसे अमृत की कोई ये बरसात है।
तुम ही तो तुम ही हो दूसरा कोई नहीं, तुमने दे दी है ये ज्ञान सौगात है।।

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

ऋषि ने जिज्ञासु श्रद्धालुओं के लिए सच्चे शिव का स्वरूप प्रकट करने के लिए संसार का वृहद उपकार किया। धर्म की आड़ में चल रहे आडम्बरों एवं पाखंडों का पर्दाफाश किया। महिलाओं को वेद पढ़ने का, यज्ञ करने का अधिकार दिलाया। जाति के नाम पर हो रहे शोषण की कठोर आलोचना की। विधवा विवाह, सती प्रथा जैसी कुरीतियों को जड़ से उखाड़ दिया। गुलामी की जंजीरों मे जकड़ी भारत माता की आजादी के लिए आवाज बुलंद की। जिनके विचारों से जागृत होकर हजारों दिवाने देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े तथा अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया। शहीदे आजम भगत सिंह का पूरा परिवार महर्षि दयानन्द का शिष्य रहा। 23 मार्च को राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह ने फांसी के फंदे को चूम लिया। महर्षि दयानन्द का भारतीय समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा, जो भी उनके जीवन में आता गया उसका जीवन क्रंदन बन गया। उनके परम अनुयायी रक्त साक्षी पं. लेखराम ने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए हिन्दुओं को विधर्मियों से बचाने के लिए अपने जीवन का बलिदान दे दिया। गुरुदत्त विद्यार्थी जो विज्ञान के प्रोफेसर थे वे परमात्मा को नहीं मानते थे, ऋषि मृत्यु के समय का नजारा देखकर गुरुदत्त विद्यार्थी का सम्पूर्ण जीवन बदल गया। उस दिवाने ने सारे सुखों को छोड़ दिया। रात-दिन केवल वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार किया। महर्षि दयानन्द का जीवन पवित्र था, महर्षि विद्वान, समाधि सिद्ध योगी, अखण्ड ब्रह्मचारी, परोपकारी, धर्मात्मा, दयालु, निर्भीक, महान तार्किक थे।

यशस्वी जीवन का सार

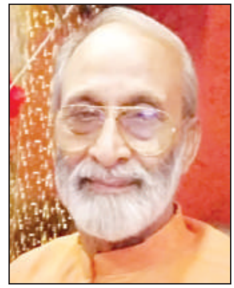

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

हमारे मन में अनेक प्रश्न जीवन के संबंध में उठते हैं कि हमारा जीवन कैसा होना चाहिए। जीवन के संबंध में ऋषियों ने कहा है– वेदवित् होना चाहिए, आदर्शवादी होना चाहिए, श्रेष्ठ पवित्र और परोपकारी होना चाहिए। वह तब सम्भव हो सकता है जब हम सच्चे मन से परमपिता परमात्मा की भक्ति करें।

क्योंकि इस सृष्टि का अधिपति भगवान हैं। उसने हर वस्तु को बनाकर उसकी सीमा व मर्यादाएं भी निश्चित कर दी हैं। हर पदार्थ एवं प्राणी अपनी नियत मर्यादा में रहकर ही ईश्वरीय प्रयोजन को पूरा करता है। एक मनुष्य ही है जो अपनी बुद्धि एवं प्रकृति का दुरुपयोग अधिक करता है और कुमार्गगामी बनता है, धर्म का सारा ढांचा, सारी परंपराएं, मान्यताएं और आस्थाएं इसी प्रयोजन के लिए है कि मनुष्य अपनी नियत निर्धारित मर्यादा के भीतर रहकर ही जीवनयापन करे।

धर्म का आधार है– आस्तिकता, ईश्वर विश्वास। जब मनुष्य ईश्वर की सर्वव्यापकता में विश्वास रखकर उसके अनुशासन से अपने कर्मों का नियोजन करता है तो उसका मन उसकी दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश रखने में समर्थ होता है, सर्वव्यापी ईश्वर की दृष्टि से हमारा कोई भी आचरण या भाव छिप नहीं सकता और समय–समय पर वह न्यायकारी, घट–घटवासी प्रभु उसका दण्ड भी देता रहता है।

समाज की आंखों में धूल झोंकी जा सकती है पर उससे कुछ भी छिपाना संभव नहीं है। यह मान्यता हमें पाप कर्मों से बचाती है। हमारी अधिकांश दुष्प्रवृत्तियां इसीलिए चलती रहती हैं कि राजदंड या समाज दंड से हम चतुरतापूर्वक बच सकते हैं।

परंतु ईश्वर के सामने ऐसी चतुरता नहीं चल पाती। इसी आधार पर मनुष्य पाप से डरता है और मर्यादाओं में रहने तथा सज्जनोचित सभ्य जीवन जीने के लिए विवश होता है। उसी आत्मा, मन और शरीर तीनों शुद्ध और पवित्र बनते हैं। आज हर दिशा में विकृतियों की भरमार है। आस्तिकता भी विकृत हो गयी है। लोग मान बैठे हैं कि थोड़ी सी चापलूसी करने या भेंट–पूजा की छोटी–मोटी रिश्वत देकर ईश्वर को अपना पक्षपाती बनाया जा सकता है और फिर अयोग्य होते हुए भी बड़ी–बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की जा सकती हैं तथा पापों के दंड से बचने की छूट भी पाई जा सकती है इसी दुर्भावना के कारण चारों ओर लोग दुष्कर्मों में लगे हुए हैं और अपना विनाश कर रहे हैं।

अनुशासन के बिना जीवन में सफलता प्राप्त कर पाना संभव ही नहीं है। परमेश्वर ने हमें समाज में सत्कर्मों के द्वारा सबकी उन्नति में सहयोग देने के लिए ही यह नर तन प्रदान किया है इस ईश्वरीय अनुशासन का पालन करना हम सबका पुनीत कर्तव्य है।

इसके लिए मनुष्य को प्रतिदिन थोड़ा समय निकाल कर ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। परमात्मा के गुणों का चिंतन करते हुए उन्हें अपनी आत्मा में धारण करने का प्रयास करते रहना चाहिए। उसकी मंगलमय छाया में रहने वाले को संसार में कोई संताप नहीं रहता और उसके लिए मृत्यु भी अमृत के समान बन जाती है। वह आत्मस्वरूप परमात्मा हमारे उत्तम कर्मों के आधार पर हमें अमर कर देता है। यशस्वी जीवन का यही रहस्य है।

सांसारिक जीवन में सत्य के दो रूप होते हैं, एक सत्य वह है जिसे हम भौतिक सत्य कहते हैं। कहने का मतलब यह है कि यदि हम अपने जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति करते हैं तो उससे मिलने वाली खुशी को सत्य मान बैठते हैं। वास्तव में वह खुशी नहीं है क्योंकि इससे हमारा अंर्तमन खुश नहीं होता है दरअसल हमारा अंर्तमन खुश होता है ईश्वर की सच्ची प्रार्थना से। सच तो यह है कि ईश्वर से प्रीति लगाना ही अंतिम सत्य है क्योंकि मोक्ष मिलने का एक मार्ग यह भी है। साधना में शांति तब आती है जब श्रद्धा और विश्वास, संयम और सदाचार भी समुचित मात्रा में मौजूद हो। दैनिक जीवन की पवित्रता ही इस बात की कसौटी है कि किसी ने वास्तविक तत्व ज्ञान को अपने दिल में बसाया है या नहीं, ईश्वर सर्वव्यापी है, यही यशस्वी जीवन का सार है।

स्वामी जी के जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा समस्तजनों को महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) की हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं!!

- प्रबंध संपादक

राष्ट्रपितामह : महर्षि दयानन्द

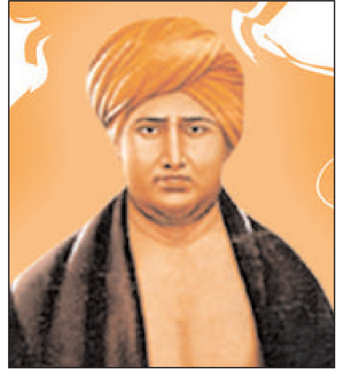

स्व. आचार्य हरिदेव आर्य

जब इस युग के महानतम् सुधारक, क्रांतकारी, वेद शास्त्रों के प्रकांड पंडित, अत्यंत दूरदर्शी, प्रभु के अनन्य उपासक, आर्य समाज के प्रवर्तक, युग-प्रवर्तक, जगदोद्धारक परमपूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का प्रदुर्भाव हुआ, उस समय देश में बड़ा भारी विप्लव हो रहा था। राष्ट्रीय शक्ति छिन्न-भिन्न थी। मुगल राज्य का सितारा डूब चुका था।

राजपुताने की वीरता निराश होकर अपने ही मरुस्थलों एवं पहाड़ियों में सुप्तावस्था में पड़ी थी। पेशवा और सिंधिया-शक्ति की स्वतंत्रता का तारा डूब-सा चुका था। नेपाली सैनिक-शक्ति युद्ध-संग्राम को उत्तेजित करने के बाद अपनी पर्वत मालाओं की ओर लौट रही थी।

उस समय देश में अशांति तथा भय का आतंक छाया हुआ था। अवस्था अत्यंत शोचनीय थी। हमारी जाति में आत्म-सम्मानता का बिल्कुल ही अभाव था। अधार्मिक भाव पनप रहे थे। भारत भूमि अनेक कुरीतियों से कंटकाकीर्ण हो चुकी थी। सैकड़ों चिताएं, भारतीय देवियों से सजीव देहों को बलात् धधका रही थी। अधर्म तथा अज्ञानता की काली निशा में भारतीय बेसुध पड़े सो रहे थे। जन्ममात्र से ब्राह्मण कहलाने वाले धर्म के ठेकेदार बने हुए थे। साधारण सी भूलों पर अथवा संदेहमात्र से ही लोग जाति से निकाल दिये जाते थे। ज्योतिष की लीला, मृतक-श्राद्ध, पत्थर या मूर्तिपूजादि के ब्रह्मबल, छत्रबल आदि को जड़वत् बना दिया था।

सत्य-ज्ञान का भानु अविद्या रूपी मेघों से ढप गया था और सर्वत्र अंधकार ही अंधकार था। आर्य जाति का बहुत बड़ा भाग धर्म ग्रंथों को पढ़ना तो दूर रहा, इनके सुनने तक का अधिकारी नहीं माना जाता था। नारी जाति की दीन अवस्था थी। विधर्मियों के कु:प्रचार से वातावरण दूषित तथा विषैला हो चुका था। हमारी जाति के लाल धड़ाधड़ ईसाई और मुसलमान बनकर देश-धर्म के शत्रु बनते जा रहे थे। निराकार भगवान की उपासना के स्थान पर भूत, प्रेत, पत्थर और पिशाच पूजा, पीर-पैगम्बर औलिया तथा कब्रपरस्ती, धागा, जंत्र-मंत्र, झाड़-फूंक तथा देवी-देवताओं की भरमार और इनके सामने माथा झुकाना मात्र ही धर्म का मुख्य अंग बन चुका था।

ऐसी दुर्दशा के समय महर्षि जी का जन्म हुआ। उन्होंने अखंड ब्रह्मचर्य का पालन किया, वैदिक-आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय कर अपने मन-बुद्धि को निर्मल कर महाविद्वान बन नाना प्रकार के कष्टों को झेलते हुए, विद्या का प्रकाश करने हित वे वीतराग संन्यासी बने और विश्व को वे दे गये जो अकथनीय तथा अवर्णनीय है, जिसका ऋण भार सहस्रों वर्षों में भी हम उतार न सकेंगे।

आज जो राष्ट्र ने करवट बदली है, देश में जागृति के जो चिन्ह दिखाई दे रहे हैं, देश की स्वतंत्रता, समाज-सुधार, शिक्षा का प्रसार, वैदिक प्रचार, ब्रह्मचर्य का प्रसार, चरित्र-निर्माण, अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा आदि-आदि पुनीत आंदोलन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ये सब जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की ही महती कृपा का फल है। इतने जादू भरे प्रभाव को समझने के लिए महर्षि जी के महान जीवन चरित्र का तथा प्रकाश-स्तम्भ रूपी उनके अमूल्य ग्रंथों का श्रद्धापूर्वक स्वाध्यायकरना आवश्यक है। इनका वर्णन इस लघु लेख में समुद्र के सामने एक बिन्दु मात्र भी नहीं है। परम पूज्य महर्षि अपने महान कार्यों तथा त्याग और तपस्या के कारण ही सदा-सदा के लिए अमर बन गये। संसार में उनकी समानता करने वाला

निराकार भगवान की उपासना के स्थान पर भूत, प्रेत, पत्थर और पिशाच पूजा, पीर-पैगम्बर औलिया तथा कब्रपरस्ती, धागा, जंत्र-मंत्र, झाड़-फूंक तथा देवी-देवताओं की भरमार और इनके सामने माथा झुकाना मात्र ही धर्म का मुख्य अंग बन चुका था। ऐसी दुर्दशा के समय महर्षि जी का जन्म हुआ। उन्होंने अखंड ब्रह्मचर्य का पालन किया, वैदिक-आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय कर अपने मन-बुद्धि को निर्मल कर महाविद्वान बन नाना प्रकार के कष्टों को झेलते हुए, विद्या का प्रकाश करने हित वे वीतराग संन्यासी बने और विश्व को वे दे गये जो अकथनीय तथा अवर्णनीय है, जिसका ऋण भार सहस्रों वर्षों में भी हम उतार न सकेंगे।

कोई नहीं है। जिस युग में महर्षि जी हुए, उसमें कई वर्ष पूर्व से आज तक ऐसा एक ही महापुरुष पैदा हुआ जो विदेशी भाषा नहीं जानता था, जिसने स्वदेश से बाहर एक पग भी नहीं रखा था, जो पूर्ण स्वदेशी था अर्थात् विचारों में, आचारों में, भाषा, वेष-भूषादि में, स्वदेशी था परंतु वीतराग संन्यासी होने और परम विद्वान होने के कारण सबका भक्ति-भाजन बना, जिसका देशी-विदेशी सभी मान करते थे, ऊंचे से ऊंचे विदेशी पदाधिकारी और स्वदेशी राजे-महाराजे जिसका अति सम्मान किया करते थे- वे महापुरुष महर्षि दयानन्द थे। स्वामी जी महाराज पहले ही व्यक्ति थे जो अपने देश में पूर्ण स्वदेशी होते हुए भी पश्चिमी देशों के बड़े-बड़े नेताओं तथा जन-जन के गुरु कहलाये। आपको अनेक पश्चिमी विद्वानों ने अपना महान् गुरु, आचार्य और धर्म पिता माना है।

स्वामी जी का जन्म वर्तमान सौराष्ट्र के मौरवी राज्य में टंकारा नामक नगर में 1881 विक्रमी तद्नुसार सन् 1824 ई. में एक उच्च ब्राह्मण कुल में पं. कर्षण जी के घर हुआ। पूज्य माता का नाम यशोदा बाई था। पिता ने अपने प्यारे पुत्र का नाम मूल शंकर रखा। मूल जी के पिता बड़े धर्मनिष्ठ और कर्तव्य पारायण व्यक्ति थे। वे शिव के बड़े उपासक थे और चाहते थे कि उनका मूल भी वैसा ही बने। मूल जी की शिक्षा का प्रबंध बाल्यकाल में घर पर ही किया गया था। यजुर्वेद कंठस्थ करने के अतिरिक्त आपने कई अन्य विषयों का भी अध्ययन किया था। आपके पिता के पास पुष्कल भूमि थी एवं वे मौरवी राज्य के एक उच्चाधिकारी थे। जब मूल जी 14 वर्ष के थे तो इनके पिता

जिस युग में महर्षि जी हुए, उसमें कई वर्ष पूर्व से आज तक ऐसा एक ही महापुरुष पैदा हुआ जो विदेशी भाषा नहीं जानता था, जिसने स्वदेश से बाहर एक पग भी नहीं रखा था, जो पूर्ण स्वदेशी था अर्थात् विचारों में, आचरों में, भाषा, वेष-भूषादि में, स्वदेशी था परंतु वीतराग संन्यासी होने और परम विद्वान होने के कारण सबका भक्ति-भाजन बना, जिसका देशी-विदेशी सभी मान करते थे, ऊंचे से ऊंचे विदेशी पदाधिकारी और स्वदेशी राजे-महाराजे जिसका अति सम्मान किया करते थे- वे महापुरुष महर्षि दयानन्द थे। स्वामी जी महाराज पहले ही व्यक्ति थे जो अपने देश में पूर्ण स्वदेशी होते हुए भी पश्चिमी देशों के बड़े-बड़े नेताओं तता जन-जन के गुरु कहलाये। आपको अनेक पश्चिमी विद्वानों ने अपना महान् गुरु, आचार्य और धर्म पिता माना है।

ने शिवरात्रि के दिन उनको शिव का व्रत रखने का आदेश दिया। आज्ञाकारी बालक मूल जी ने उसे श्रद्धा सहित स्वीकार कर लिया और रात्रि को अपने पिताजी के साथ शिवालय में रात्रि जागरण एवं शिव-पूजन को गये। कुछ रात्रि व्यतीत होने पर उनके पिताजी तथा अन्य भक्तगण सो गये परंतु मूलजी की आंखों में नींद कहां? उनको तो साक्षात् शिव के दर्शन करने की अभिलाषा थी। **इसी बीच में एक चूहा मंदिर के बिल में से निकला और शिव-पिण्डी पर भक्तों द्वारा चढ़ाया पूजोपहार बड़े आनंद से खाने लगा और उस पर उछल-कूदकर मल-मूत्र द्वारा अपवित्र भी करने लगा।**

शिव दर्शन की लालसा से पत्थर के लिंग के सामने व्रतोपवास किये मूर्तिवत् दृढ़, स्थिर, शांत बैठे अबोध भक्त मूलजी के शरीर में बिजली सी दौड़ गई। उनके अंत:करण में नाना प्रकार के विचार तरंगे उठने लगीं। ओह! क्या यही वे भगवान शिवजी हैं जो दैत्यों का संहार करने वाले और भक्तों को वर प्रदान करने वाले हैं। अहो? इसके सिर पर तो ये अपावन प्राणी चूहे दौड़ लगाकर और इसे अपवित्र कर इसके चढ़ावे को बड़ी निर्भयता से खा रहे हैं। इसमें तो इन तुच्छ जीवों को भगाने का भी बल नहीं। यह महादेव कैसा? जो अपनी रक्षा नहीं कर सकता वो हमारी रक्षा क्या करेगा? नहीं, यह सच्चाशिव नहीं हो सकता। पिता द्वारा बताने पर कि इस कलियुग में उस शिव का साक्षात् दर्शन नहीं होता। इसलिए पाषाणादि की मूर्ति बनाकर उसमें महादेव की भावना रखकर पूजा की जाती है, मूर्ति पूजा से मूल जी की आस्था उठ गई और उन्होंने सच्चे शिव का साक्षात् करने का दृढ़ संकल्प किया।

उन्होंने घर पर जाकर व्रतोपवास तोड़ दिया। शिवरात्रि की घटना से सच्चे शिव की खोज में भटकते अबोध भक्त मूल जी की आत्मा जाग उठी। शिव जी तो न मिले, हां! उसका बोध मिल गया। इसी कारण ही तो यह रात्रि बोध-रात्रि हुई। इस घटना के दो वर्ष बाद प्यारी भगिनी का तथा पांचवे वर्ष में उनसे अति प्रेम रखने वाले बड़े धर्मात्मा विद्वान चाचाजी की विशूचिका से मृत्यु हो गई। महर्षि जी के शब्दों में उस समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं भी चाचा जी के सदृश एक दिन मरने वाला हूं। उनकी मृत्यु होने से अत्यंत वैराग्य उत्पन्न हुआ कि संसार में कुछ भी स्थिर नहीं।

प्रेरणामयी पर्व : ऋषि बोधोत्सव

ऋषि बोधोत्सव आर्यों का पर्व है, प्रकाश दिवस है। यह ईश्वरीय कृपा एवं उसकी शक्ति का प्रताप था कि आज के दिन महाशिव के रात्रि के पावन पर्व के सुअवसर पर महर्षि देव दयानन्द जी को बोध हुआ था। ज्ञान की ज्योति जली और सबके जीवन में प्रकाश ही प्रकाश हो गया। भारतीय जन-जीवन प्रगति की राह पर अग्रसर हुआ। भारत में पुनरोत्थान के नवयुग का शुभारम्भ हुआ। भारत माता जो शताब्दियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ी सिसकियां ले रही थी। चारों ओर सभी प्रकार का शोषण ही शोषण हो रहा था। ऐसे भयावह समय पर महर्षि भारतीयों के लिए मसीहा बन कर आया, भारत का सोया भाग्य जगाया परस्पर नफरत का भाव मिटाया। उनके मानवीय उद्घोषणों से उदोलित होकर मृतसम भारतीयों की आत्मा जाग उठी और कह उठी-

इंसान को इंसान की नजरों से देख, मत इसे हैवान की नजरों से देख। देवताओं के सभी गुण तुझमें आयेगे, इंसान को भगवान की नजरों से देखा। भर दे विश्व में प्रेम भावना। सबके भले की कर कामना सब मिलकर प्रभु गुण गाए। वैदिकधर्मी सब बन जाए। ऋषि-बोधोत्सव इसी उदात भावना का प्रतीक है। ऋषि बोधोत्सव का टंकारा में वही स्थान है जो स्थान कुम्भ के मेले का हरिद्वार और प्रकाश महोत्सव का अमृतसर में है। देश-विदेशों से आने वाले श्रद्धालु ऋषि भक्तों की असीम उपस्थिति ही इसकी सच्ची श्रद्धा और शोभा है। यहां के गुरुकुल के बच्चों की अतिथिजनों की सेवा एवं अन्य गतिविधियां अति प्रशंसनीय एवं मन-भावन होती है। जिनके सारगर्भित भावों को देख-सुन व अनुभव कर भक्तजन भाव विभोर हो उठते हैं। यहां की हजारों श्रद्धालुओं की सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं की व्यवस्था पूरे भारत में विशेष स्थान रखती है। यह सब संस्था के आयोजकों के सहयोग का अथक, परिश्रम का परिणाम है। कोई तन से तो कोई मन से व कोई धन से अपना-अपना सहयोग दे रहा है।

भक्तजन भाव-विभोर होकर स्वयं को धन्य मानते हैं और इसे अपने किसी पूर्व जन्म के पुण्य का फल भी। कुछ ऋषि भूमि रज को शिरोधारण करते है तो कुछ जीवन प्रयन्त प्रतिवर्ष यहां आने का संकल्प दोहराते हैं। उनमें से मैं स्वयं एक हूं। हम दोनों ने यहां आना प्रारम्भ किया था। काश जीवन पर्यंत आने का संकल्प पूरा हो पाता। ऋषि बोधोत्सव मात्र एक मेला नहीं है बल्कि इसके गर्भ में बहुत से सारभूत अनमोल तत्व समाहित है। यह त्याग, तपस्या ज्ञान-विज्ञान तथा बलिदानियों के बलिदान का प्रतीक है। राष्ट्रीयता का आधार है। एक युग पुरुष भारत के भाग्यविद्याता तथा महाबलिदानी की जीती जागती तस्वीर है।

जो देश कभी विश्व गुरु था जिसने राम और कृष्ण को जन्म दिया वह महान देश इतना नीचे कैसे गिर सकता है। ऋषि को इस मर्ज को समझने में अधिक समय नहीं लगा। उन्होंने इसका ऑपरेशन करने का दृढ़, संकल्प लिया, आर्य समाज संगठन की स्थापना की। वेदभाष्य रूपी हीरा जनता को मिला, अंधेरा चुंधिया गया। प्रकाश हुआ, एक ईश्वर निराकार की पूजा चल पड़ी, देवदासी जैसी प्रथा का अंत हुआ। पूजा के ढोंग में से वस्त्रों की लाज लेने वालों की पोल खुल गई। पंचमहायज्ञों का विधान सामने आया। जो धी आरती के नाम पर पंडा-पुजारी अकेले हड़प कर जाते थे वहीं घी हवनकुंड में जलकर प्राणीमात्र का भला करने लगा। उच्च वर्गों के लोगों के भेदभाव एवं अत्याचारों के कारण, काफी लोगों ने धर्म परिवर्तन कर लिया था उनके लिए अशुद्धि आंदोलन चलाया और अधिकांश लोग वापस लौट आये। नारी के लिए वैदिक शिक्षा पर बल दिया क्योंकि एक शिक्षित संस्कारवान मां ही देश को संस्कारवान नागरिक और देशभक्त वीर सैनिक दे सकती है। नारी शक्ति है, दुर्गा है, सरस्वती है, सर्वोपरि, राष्ट्र निर्माता है।

महर्षि स्वयं एक आदर्श राष्ट्र भक्त थे। राष्ट्र भक्ति उनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। वह राष्ट्र हितों के लिए जिये और देशवासियों के उद्धार, उत्थान और कल्याण के लिए अपने प्राण आहूत कर दिये। उनकी राष्ट्र भक्ति और राष्ट्रीयता विलक्षण, अद्भुत और निराली थी। राष्ट्र का उत्थान ही उनके जीवन का लक्ष्य था। देशवासियों के प्रति उनका प्रेम अटूट था वह लिखते हैं-'जैसे ईश्वर सृष्टि का, प्रजा का पुत्रवत ध्यान करता है वैसा राजा भी करे।' राजा शुभगुण, कर्म स्वभाव वाला होना चाहिए। उन्हें अपने देश भारत माता पर बड़ा गर्व था-यह आर्यवर्त देश ऐसा है कि इसके सहृदय भूगोल में कोई दूसरा देश नहीं। इसलिए इस भूमि का नाम सवर्णा भूमि है। यह सभी प्रकार के अमूल्य रत्नों को उत्पन्न करती है।

■■ **अरुणा सतीजा, जबलपुर**

महर्षि दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में विद्या और अविद्या

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के नवम् समुल्लास में तो विद्या और अविद्या का विवेचन किया ही है, 'युजुर्वेद' के चालीसवें अध्याय के तीन मंत्रों (मंत्र संख्या, 12, 13 और 14) का भाष्य करते हुए भी इसी गूढ़ एवं रहस्यात्मक विषय का विवेचन किया है। ऋषिवर दयानन्द ने विद्या-अविद्या के रहस्य को समझाने के लिए वेद एवं योगदर्शन का आधार ग्रहण किया है तथा इस गहन विषय के संबंध में नवीन वेदांतियों के मत का सतर्क खंडन भी किया है। नवम् समुल्लास के प्रारम्भ में स्वामी जी ने यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के चौदहवें मंत्र को उद्धृत किया है। मंत्र इस प्रकार है-

विद्यां चाविद्या च यस्तद्वेदोभय सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

– यजुर्वेद, 40-14

मंत्रपाठ के उपरांत यदि इसका अन्वय कर थोड़ी-बहुत संस्कृत जानने वाला भी प्रयास करे तो वह इसका यही अर्थ करेगा कि जो विद्या और अविद्या इन दोनों को साथ-साथ जानता है अर्थात इन दोनों के वास्तविक स्वरूप को साथ-साथ जानता है, वह अविद्या के द्वारा मृत्यु को तर कर विद्या से अमरता को प्राप्त करता है। यह मंत्र रहस्यात्मक, गूढ़ और गहन-गंभीर है। सामान्यत: शब्दकोशों में विद्या का अर्थ 'ज्ञान' और अविद्या का अर्थ 'अज्ञान' मिलेगा, किन्तु ऋषिवर दयानन्द ने अविद्या का अर्थ किया है कर्मोपासना। अविद्या का यह अर्थ किसी भी शब्दकोश में नहीं मिलेगा। अविद्या का यह अर्थ तो कोई मंत्रद्रष्टा ऋषि ही कर सकता है और अविद्या का यह दार्शनिक अर्थ समाधिस्थ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया है। स्वामी जी के शब्दों में, जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात कर्मोपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। (सत्यार्थप्रकाश, नवम् समुल्लास, पृ. 166) स्पष्टत: ऋषिवर दयानन्द ने अविद्या का अर्थ किया है कर्मोपासना तथा विद्या का अर्थ किया है- यथार्थ ज्ञान। साथ ही योगसूत्र के साक्ष्य पर अविद्या और विद्या को और अधिक स्पष्ट किया है, ताकि सामान्य साधकों की समझ में भी वह विषय अच्छी प्रकार से आ जाए।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के बारहवें मंत्र में कहा गया है कि जो लोग अविद्या की उपासना करते हैं, वे अज्ञानरूप घोर अंधकार में प्रविष्ट होते हैं तथा जो लोग विद्या में रत हैं, वे उन अज्ञानियों से भी अधिक अंधकार में प्रविष्ट होते हैं। जहां यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के चौदहवें मंत्र में विद्या से मोक्ष प्राप्ति की बात की गयी हैं, वहां इस मंत्र में विद्या से घनघोर अंधकार में प्रविष्ट होने की बात कही गयी और यह स्थिति सामान्य पाठक, साधक को असमंजस में डाल सकती है, अत: इन दोनों मंत्रों में आगत विद्या शब्द के अर्थ-भेद का ठीक-ठीक हृदयगम कर लेना अत्यावश्यक है।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के बारहवें मंत्र में आये 'विद्या' का अर्थ करते हुए स्वामी जी ने लिखा है कि जो शब्द, अर्थ और इनके संबंध को तो जानते हैं, किन्तु जो सत्यभाषण, पक्षपातरहित, न्यायाचरण के धर्म से रहित हैं तथा अहमान्य हैं, ऐसे तथाकथित विद्वान वस्तुत: अज्ञानी ही हैं और उनकी यह विद्या वस्तुत: अविद्या ही है। विद्या वास्तव में विद्या तब बनती है, जब वह वैदिक आचरण से जुड़ जाए तथा विद्वान व्यक्ति को आचारवान एवं विनम्र बना दे। आचारहीन व्यक्ति का कोरा शब्दार्थ वस्तुत: अविद्या ही है, क्योंकि न तो उससे आत्मा को जाना जा सकता है, न ब्रह्म को और न मोक्ष को ही प्राप्त किया जा सकता है। कहा भी है-'आचारहीनं न पुनन्ति वेदा:' तथा 'विद्या ददाति विनयम्। विनम्र, सदाचारी तत्वज्ञानी ही मुक्ति लाभ का अधिकारी हो सकता है। 'सत्यार्थप्रकाश' के नवम् समुल्लास में अविद्या के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए स्वामी जी ने महर्षि पतंजलि के योग दर्शन के साधनपाद के 5वें सूत्र का उल्लेख किया है, जो निम्नस्थ है-

अनित्याशुचि दु:खानात्मसु नित्यशुचि सुखात्मख्यातिरविद्या॥

इस सूत्र का अर्थ है कि अनित्य को नित्य, अपवित्र को पवित्र, दु:ख को सुख और अनात्मा को आत्मा मानना-ये चार प्रकार का मिथ्याज्ञान 'अविद्या' है। अविद्या विद्या विरुद्ध ज्ञानांतर है-विपरीत ज्ञान है। अविद्या के उक्त चार प्रकारों को स्पष्ट करने के लिए स्वामी जी ने सामाजिक शैली में कुछ उदाहरण दिये हैं- जो अनित्य संसार और देहादि में नित्य अर्थात जो कार्य जगत् देखा, सुना जाता है, सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यही देवों का शरीर सदा रहता है वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है।

➲ ➲ प्रो. डॉ. सुंदरलाल कथूरिया

सत्य का ग्रहण व धारण तथा असत्य का त्याग ही मनुष्य का धर्म एवं कर्तव्य

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

परमात्मा ने मनुष्य को बुद्धि दी है जो ज्ञान प्राप्ति तथा सत्य व असत्य के विवेचन में मनुष्य की आत्मा की सहायक होती है। मनुष्य को सत्य व असत्य के स्वरूप को जानने का प्रयत्न करना चाहिये। सत्य को जानकर ही मनुष्य व उसकी आत्मा की उन्नति व सत्य को न जानने से मनुष्य असत्य तथा अविद्या से युक्त हो जाते हैं जिससे मनुष्य व उसके जीवन की अवनति होती है। मनुष्य सत्य को कैसे प्राप्त कर सकता है? इसका उत्तर है कि अपनी बुद्धि की सहायता से ईश्वरीय ज्ञान वेद व सद्ग्रंथों का अध्ययन कर तथा उनकी प्रत्येक मान्यता का विचार व परीक्षा कर उसके सत्य व असत्य होने की पुष्टि कर सकता है। मनुष्य जिस मान्यता को मानता है उसके विपरीत उठने वाले सभी प्रश्नों पर विचार करने सहित उसके पक्ष व समर्थन में जो विचार व कथन होते हैं, उनकी परीक्षा कर वह सत्य को प्राप्त हो सकते है।

ऋषि दयानन्द ने इसी विधि से न केवल सनातन वैदिक धर्म अपितु अन्य मत-मतान्तरों का अध्ययन भी किया था। उनका उद्देश्य सत्य का ग्रहण करना और असत्य का त्याग करना था। उन्होंने ऐसा यथार्थ रूप किया भी। उन्हें किसी मत व सम्प्रदाय की सत्य मान्यता का खंडन नहीं किया। इसके साथ ही उन्हें जिस मत की जो बात भी सत्य के विपरीत दृष्टिगोचर हुई तथा जिसकी पुष्टि सत्य का निर्धारण करने के सिद्धांत से असत्य सिद्ध हुई, उसका उन्होंने निर्भयता से प्रकाश किया जिससे सभी मनुष्य असत्य का त्याग कर उसके दुष्परिणामों से बच सकें। मनुष्य का जीवन कर्म फल बंधन में बंधा हुआ होता हैं। मनुष्य ज्ञान व अज्ञान से युक्त जो भी कर्म करता है, उसका फल उसे ईश्वर व उसकी व्यवस्था से प्राप्त होता है। मनुष्य को अपने सभी पाप व पुण्य कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। उसे कोई मत व उसका आचार्य क्षमा नहीं करा सकता। अनेक मतों में लोगों को लुभाने के लिये पापों के क्षमा होने का विधान मिलता है जिसका ऋषि दयानन्द के विचारों से खंडन होता है।

यदि मनुष्य सत्य कर्म करता है तो उसको इससे पारितोषिक के रूप में ईश्वर से सुख सहित आत्मिक, शारीरिक व सामाजिक उन्नति प्राप्त होती है, वह यशस्वी होता है और यदि वह सत्य की उपेक्षा कर अविद्या व स्वार्थ वश असत्य कर्म करता है इसका दंड भी उसे परमात्मा से यथासमय प्राप्त होता है। संसार का कोई भी मनुष्य दुःख को प्राप्त होना नहीं चाहता। इसलिये उसे सुख प्राप्ति के लिये ज्ञान से युक्त होकर केवल सत्य कर्मों व कर्तव्यों का ही सेवन करना उचित होता है। ऐसा करके ही आत्मा की उन्नति होकर मनुष्य को सुख प्राप्त

मनुष्य को सत्य व असत्य के स्वरूप को जानने का प्रयत्न करना चाहिये। सत्य को जानकर ही मनुष्य व उसकी आत्मा की उन्नति व सत्य को न जानने से मनुष्य असत्य तथा अविद्या से युक्त हो जाते हैं जिससे मनुष्य व उसके जीवन की अवनति होती है। मनुष्य सत्य को कैसे प्राप्त कर सकता है? इसका उत्तर है कि अपनी बुद्धि की सहायता से ईश्वरीय ज्ञान वेद व सद्ग्रंथों का अध्ययन कर तथा उनकी प्रत्येक मान्यता का विचार व परीक्षा कर उसके सत्य व असत्य होने की पुष्टि कर सकता है। मनुष्य जिस मान्यता को मानता है उसके विपरीत उठने वाले सभी प्रश्नों पर विचार करने सहित उसके पक्ष व समर्थन में जो विचार व कथन होते हैं, उनकी परीक्षा कर वह सत्य को प्राप्त हो सकते है। ऋषि दयानन्द ने इसी विधि से न केवल सनातन वैदिक धर्म अपितु अन्य मत-मतान्तरों का अध्ययन भी किया था। उनका उद्देश्य सत्य का ग्रहण करना और असत्य का त्याग करना था। उन्होंने ऐसा यथार्थ रूप किया भी। उन्हें किसी मत व सम्प्रदाय की सत्य मान्यता का खंडन नहीं किया। इसके साथ ही उन्हें जिस मत की जो बात भी सत्य के विपरीत दृष्टिगोचर हुई तथा जिसकी पुष्टि सत्य का निर्धारण करने के सिद्धांत से असत्य सिद्ध हुई।

होता है। यह सिद्धांत वेद, उपनिषद, दर्शन, सत्यार्थ प्रकाश आदि सभी प्रामाणिक ग्रन्थों से पुष्ट होता है। सभी मनुष्य सुखी हों, उनको दु:ख प्राप्त न हों, इसी कारण से ऋषि दयानन्द ने सत्य ज्ञान से युक्त ईश्वरीय ज्ञान वेद व वेदानुकूल ग्रन्थों को अपनाया था तथा उनका प्रचार किया था। लोगों की सहायता के लिये ही उन्होंने तीन हजार से अधिक ग्रंथों का अध्ययन कर उनकी सत्य मान्यताओं को वैदिक प्रामाणिक ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में प्रस्तुत किया था। सत्यार्थप्रकाश संसार का अनुपम एवं मनुष्य जीवन की उन्नति का आधार स्तम्भ है। यह मनुष्य को सत्य मान्यताओं से परिचित कराने के साथ असत्य का बोध भी कराता है।

सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने से मनुष्य की सभी शंकाओं का समाधान हो जाता है। सत्यार्थप्रकाश में सत्य का पोषण और असत्य का खंडन किया गया है। इस कारण से सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को आध्यात्मिक एवं धार्मिक विज्ञान विषयक ग्रन्थ व धर्म विषयक एक विश्व कोष कह सकते हैं। संसार के सभी मनुष्यों को इसका अध्ययन कर इससे लाभ उठाना चाहिये। ऐसा करके हम वर्तमान व भविष्य सहित परलोक के दु:खों से बच सकते हैं। इसी में संसार के सभी मनुष्यों का हित है। ऐसा न करके मनुष्य अपने मनुष्य जीवन को सुधारने के स्थान पर उसकी हानि करता है और इससे उसका परलोक भी बिगड़ता है।

संसार में हम देखते हैं कि मनुष्य विद्या पढ़कर ही विद्वान व सुखी होते हैं। अज्ञान ही मनुष्य के दु:खों का कारण हुआ करता है। शिक्षा प्राप्त करते व अध्ययन करते हुए मनुष्य किसी विषय के सत्य मान्यताओं व सिद्धांतों का ही अध्ययन करता व उसको अपनाता है। इसी से उसे नाना प्रकार की उपलब्धियां प्राप्त होती हैं और वह समाज में धन व ऐश्वर्य सहित सम्मान भी अर्जित करता है। यदि वह विद्या की पुस्तकों में वर्णित सत्य बातों का त्याग कर उसके विपरीत बातों को अपना ले तो समाज में उसकी ख्याति व उन्नति नहीं होती। इसी प्रकार से धर्म व समाज में भी मनुष्य को सत्य सिद्धांतों, मान्यताओं, क्रियाओं व कर्मों अथवा कर्मकांडों व परम्पराओं को ही अपनाना होता है। जो ऐसा करते हैं उनका सभी लोग मान व सम्मान करते हैं। सभी लोग विश्व में उत्पन्न विद्वानों व वैज्ञानिकों का इसीलिए सम्मान करते हैं कि उनके सभी कार्य व खोजें मनुष्य जाति की उन्नति व सुख के लिये होती हैं। कोई मनुष्य विद्वानों व वैज्ञानिकों का उनके देश व अन्य बातों के आधार पर सम्मान नहीं करता अपितु उनकी योग्यता व उससे होने वाले मनुष्यों के हित के लिये सम्मान करता है। इसी प्रकार से धर्म व समाज में भी ऐसे ही विद्वानों, धर्माचार्यों व धर्म प्रचारकों को सम्मान मिलना चाहिये जो अपनी सभी बातों, मान्यताओं व सिद्धांतों को सत्य की कसौटी पर सिद्ध कर प्रचार करते हों।

ऐसा करता हुआ कोई आचार्य व धर्माचार्य दिखाई नहीं देता। अपवाद केवल ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायी ही हुए हैं जो अपनी प्रत्येक मान्यता व कर्मकांड को करने के पक्ष में तर्क, युक्ति व प्रमाण देते हैं। इसलिये यह आवश्यक होता है कि जो धर्म व व्यवहार की बातें प्रामाणिक, तर्क एवं युक्ति से सिद्ध हों उसी को स्वीकार करना चाहिये। धर्म व सम्प्रदायों में सत्य को मानने व असत्य का त्याग करने का सिद्धांत काम करता दृष्टिगोचर नहीं होता। सर्वत्र 'अपनी अपनी ढफली अपना अपना राग' जैसी स्थिति देखी जाती है। इसी कारण से समाज अनेक मत-मतान्तरों एवं सम्प्रदाय आदि में बंटा हुआ है। इन कारणों से सदियों से मनुष्य मनुष्य के बीच संघर्ष होता आ रहा है और यह हमेशा चलता रहेगा।

➡ ➡

महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के बारे में महापुरुषों के विचार

- स्वराज्य आंदोलन के प्रारंभिक कारण स्वामी दयानन्द की गिनती भारत के निर्माताओं में सर्वोच्च है। वे भारत के कीर्ति स्तम्भ थे जहां-जहां आर्य समाज वहां-वहां क्रांति (विद्रोह) की आग है।

  - ग्रास ब्रोंड (एक अंग्रेज अधिकारी)

- स्वामी दयानन्द मेरे गुरु है मैने संसार में केवल उन्हीं को गुरु माना है वे मेरे धर्म के पिता है और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है, इन दोनों की गोदी में मैं पला हूं, मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाया।

  -पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

- महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के पितामह थे। वे राष्ट्रीय प्रवृत्ति और स्वाधीनता के आन्दोलन के प्रथम प्रवर्तक थे। **- अनन्त शयनम् आयंगर**

दयानन्द-गुण-गौरवम्

महर्षि दयानन्दः गुजरात-प्रान्तान्तर्गत-टंकारानगरे १८२४ ईसवीये जनिं लेभे। अस्य पितृवर्यः कर्षणजीतिवारी मातृवर्या अमृतवाई चास्ताम्। शास्त्र विधिमनुसृत्य जनकोऽस्य दशमेऽहनि मूलशंकर (मूलजी) इति नामधेयम् अकरोत्। अष्टमे संवत्सरे एनमुपानयत्। प्राप्ते तु त्रयोदशे वर्षे जनक एनं शिवरात्रिव्रतम् आदिदेश। शिवरात्रिव्रतकाले स निशीथे शिवोत्तमाङ्गम् आसाद्य नैवेद्यम् अश्नन्तं मूषकमेकम् अद्राक्षीत्। तदा चिन्तापिहितवृत्तिर्मनसोद्वेलितः पितरं शिवस्वरूपम् अप्राक्षीत्-किमयं मूर्तः शिवः सत्यः? उताहो शिवोऽन्य एव?

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

जनकोऽस्य तज्जिज्ञासा समाधानेऽक्षमोऽभूत्। तदा स सत्यं शिवम् अन्वेष्टुं प्रतिज्ञातवान्। गृहे स्वभगिन्याः पितृव्यस्य च निधनम् आलोक्य कथं मोक्षावाप्तिर्जन्ममृत्युबन्धननिवृत्तिश्च स्यादिति वैराग्यम् उद्भूत्। स गृहं पितरौ च परित्यज्य वनमगात्। तत्र साधुसंगत्याऽपि न तृप्ति लेभे। पूर्णानन्दयतेः संन्यासं गृहीत्वा 'दयानन्द सरस्वती' इत्याख्यां जगाम।

ततो हिमालयं प्राप्त तपश्चक्रे। पश्चाच्च विरजानन्दयतीश्वाराणां ख्याति संश्रुत्य तदन्तिकम् अवाप। तस्माद् ज्ञानभास्कराद् व्याकरणादिकम् अध्यैष्ट। वेदशास्त्रादिशिक्षाम् अवाप्य गुरुदक्षिणारूपेण तस्मै लवङ्गानि प्रायच्छत्। गुरुश्च तं समादिशत्- 'वेदविद्या विद्योतम्, शास्त्राणि समुल्लासय, भुवने वैदिकधर्मज्योतिः प्रज्वालय, सत्यशास्त्राणि समुद्धर, मतमतान्तरप्रसारिताम् अविद्यानिशीथिनीम् अपसारय, पाषण्डततिं समुन्मूलय' इति।

काश्यां १० नवम्बर, १८६९ ईसवीये 'मूर्तिपूजा वेदविरुद्धा' इति विषयमाश्रित्य तस्य काशीस्थैर्विद्वद्भिः शास्त्रार्थो बभूव। तत्र च विजयश्रीरेनम् अवृणोत्। तस्य विजयोद्घोषस्तदानीन्तैः समाचारपत्रैः पायोनीयर-हिन्दु ज्ञानप्रदायिनी- प्रभृतिभिः प्रसारित। स १३ अप्रैल, १८७५ ईसवीये मुम्बापुर्यां सर्वप्रथमम् आर्यसमाजम् अस्थापयत्।

भारतवर्षस्य विभिन्नप्रदेशेषु प्रचारादिविधिना वैदिकधर्मसिद्धान्तान् प्रासारयत्। जोधपुरनगरे २९ सितम्बर, १८८३ ईसवीये नन्हीनाम्न्या वेश्याया वशगो भूत्वाऽस्थ पाचको जगन्नाथो दुग्धे विषं सम्मिश्र्यैनं प्रादात्। ततश्च स ३० अक्टूबर, १८८३ ईसवीये मङ्गलवासरे दीपावलि पर्वणि ज्ञानराशिर्यतीश्वरोऽयं भौतिकं शरीरं विहाय यशः शेषताम् अयात्। भारतवर्ष समाजसुधारकेषु महर्षिर्दयान्दो मूर्धन्यः। तस्य समा-सेवारकार्येषु सर्वोत्कृष्टत्वं पाश्चात्यैरपि मनीषिभिः साह्यादम् उद्घोष्यते। स महर्षिरेव जन्ममूलां जातिप्रथां निरस्य गुणकर्मानुसारं वर्णव्यवस्थां वेदाभिमताम् अघोषयत्। समाजे प्रचलितं बद्धमूलम् अनर्थमूलं च सर्वविधमपि पाषण्डं प्रपञ्चम्, धार्मिकमन्धानुकरणम्, अंधविश्वासं भूतप्रेतादिप्रवादं च निराकरोत्। मूर्तिपूजैषा सर्वविधायाः पाषण्डपरम्पराया आधारभूतेति निर्णाय, अस्या वेदविरुद्धत्वं चावगत्य, युक्ति-प्रमाण-पुरःसरं भूर्तिपूजाम् अखण्डयत्। मृतानां पितणां श्राद्ध-तर्पणादिविधिरपि वेदविरुद्ध एवेति स प्रत्यपादयत्। मातृशक्तेरुन्नतिमन्तरेण न देशोन्नतिः सम्भवतीति विचारं-विचारं स्त्रीशिक्षायां बलं न्यधात्। स एव स्त्रीशिक्षायाः सर्वप्रथमप्रचारकत्वेना-भिनन्द्यते। स आर्षपद्धतिमनुसृत्य गुरुकुल संस्थापनासमकालमेव कन्यागुरुकुलपद्धतिमपि प्रावर्तयत्। अस्पृश्योद्धारविषये स महात्मनो गान्धेरग्रदूतः। स बालविवाहम् अहितकरमिति निश्चित्य न्यषेधयत्। विधवाविवाहम्, विधवाश्रमम्, अनाथालयादिकं च प्रावर्तयत्।

राष्ट्रभाषाया हिन्दीभाषाया अपि प्रवर्तने तस्यापूर्व योगदानम्। गुर्जरदेशीयोऽपि सन् संस्कृतभाषानिष्णातोऽपि सन्, लोकहितभावनया आर्यभाषा हिन्दीभाषामेव लेखनस्य प्रचारस्य च माध्यमं चक्रे। हिन्दीभाषाप्रचारे आर्यसमाजस्य यथा योगदानम्, न तथाऽन्यस्य कस्यचिदपि समाजस्य। स वेदाध्ययनम् आर्याणां परमकर्तव्यम् अमन्यत। अतएव स वेदाध्ययनेऽतीव बलं न्यधात्। वेदा एवार्यजातेः प्रमाणत्वेन संमान्या ग्रंथाः सन्ति, इत्येवं सोऽघोषयत्। भारते शिक्षाप्रसारे तन्मतमनुरुध्य प्रवर्तितानां डीएवी कालेज-प्रभृतीनां महत्वपूर्णं योगदानम्। राष्ट्रियता-जागरणेऽपि तस्य विशिष्टं योगदानम्। १८५७ ईसवीये संजातायां राष्ट्रियक्रान्तौ तस्य महर्षेः परोक्षं योगदानमभूदिति ऐतिह्यविद्भिर्निश्चप्रचं प्रतिपाद्यते। सत्यार्थप्रकाशे स्फुटं तेन प्रतिपाद्यते यद् निकृष्टमपि स्वराज्यं श्रेयोवहादपि परकीयाद् राज्यात् श्रेयस्करम्। कृतयः महर्षिर्दयानन्दः प्रथिततमाः कृतयः सन्ति- ऋग्वेदभाष्यम्, यजुर्वेदभाष्यम्, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, सत्यार्थ प्रकाशः, संस्कारविधिः, गोकरुणानिधिः, व्यवहारभानुः, आर्याभिविनय-प्रभुतयः। तत्र नैरुक्तप्रक्रियाम् आश्रित्य कृतं वेदभाष्यं वेदानां गौरवं सर्वज्ञाननिधानत्वं च प्रतिष्ठापयति। सत्यार्थप्रकाशो विश्ववाङ्मयस्य प्रकाशस्तम्भः। सोऽयं स्वसिद्धान्त समर्थनेन परपक्षनिरसनेन चाभुवनं प्रथतेतमाम्।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महान समाज सुधारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का बाल्यकाल का नाम मूल शंकर था। इनके पिता का नाम कर्षण लाल तिवारी था। इनका जन्म 12 फरवरी 1824 को मौरवी प्रांत के टंकारा नामक ग्राम में हुआ था। पौराणिक पर्व शिवरात्रि पर इनके पिता ने उपवास रखने व मंदिर में रहने को कहा अर्द्धरात्रि को जब भक्तगण भजन-कीर्तन करते-करते सो गए तो यह बालक जागता रहा पिता ने कहा था शिव संसार का रक्षक हैं। बालक मुंह पर पानी के छींटे मार-मार कर जागता रहा और शिव मूर्ति पर ध्यान था अचानक उसने देखा कि कुछ मूषक वहां मकर मूर्ति पर आ कूदने-फादने लगे और मूर्ति पर चढ़ा नैवेद्य खाने लगे यह दृश्य देख बालक सोचने लगा कि यह कैसा शिव है जो संसार की रक्षा करता है अपनी रक्षा मूषकों से नहीं कर सकता यह सच्चा शिव नहीं हो सकता। ऐसा विचार उनके मन में उथल-पुथल मचाए हुए था बहुत से प्रश्न करने पर संतोषजनक उत्तर नहीं मिला।

उधर उनकी बहन व चाचा की मृत्यु पर विचार आया कि सभी को मृत्यु एक ना एक दिन अवश्य आती है यह जीवन मृत्यु क्या है? इन शंकाओं के चलते मूलशंकर ने घर छोड़ दिया। साधु-संन्यासियों, पंडित-पुजारियों से मिले कहीं समाधान न मिला अंत में मथुरा में दंडी स्वामी विरजानन्द की कुटिया पर पहुंचे दरवाजा खटखटाया अंदर से पूछा कौन? मूलशंकर से दयानन्द बने, दंडी स्वामी के दर्शन हेतु आए अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करने आए इस अभिलाषी ने कहा यही जानने आया हूं मैं कौन हूं। दंडी स्वामी ने उसे अपना शिष्य बना लिया और सर्वप्रथम अनार्ष ग्रंथों को यमुना में डालने को कहा। यही स्थान था जहां दयानन्द को संसार का उपकार करने, अंधविश्वासों को दूर करने तथा वेद प्रचार करने का आदेश दक्षिणा स्वरूप मिला।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हरिद्वार में 'पाखंड खंडिनी पताका फहराई और उसके पश्चात सम्पूर्ण भारत में पाखंड रूपी तिमिर का नाश करने तथा वेद ज्ञान का प्रकाश करने में लग गए और नंगे पैर नंगे बदन ही भारत वर्ष में चारों ओर सर्दी-गर्मी, पर्वत-मैदान आदि में घूमघाम कर साधारण जन से लेकर उच्च कोटि के राजनीतिज्ञों, राजाओं महाराजाओं, मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि में सर्वत्र वेदज्ञान की ज्योति को प्रकाशित किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती महान् समाज सुधारक थे। भारत की स्वतंत्रता हेतु क्रांति में भी भाग लिया था। 1875 में आर्य समाज की स्थापना की तथा बाल विवाह, मूर्ति पूजा, विधवा विवाह, पशु बलि, छुआछूत, ऊंच-नीच, जातिवाद अंधविश्वासों पर कुठाराघात किया। वेदभाष्य किया, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेददादि भाष्य, भूमिका, गोकरुणानिधि, स्वमंतव्य प्रकाश आदि अनेक पुस्तकें लिखी। 1857 में क्रांतिकारियों के सम्पर्क में रहे थे। इनके सम्पर्क में रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, बाला साहब, तात्या टोपे, अजीमुल्ला एवं लाल कुंवर सिंह रहे। हरिद्वार में ही महर्षि ने आर्य समाज के दस नियम निर्धारित किए उन्होंने कहा वेद ज्ञान ईश्वरीय है प्रथम नियम में ही स्पष्ट है सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

उन्होंने बताया संसार का निर्माण करने वाली व संसार को चलाने वाली सर्वशक्तिमान सत्ता एक ही है जो सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, न्यायकारी, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, दयालु, अजन्मा, अनादि आदि गुणों वाला है। महर्षि दयानन्द सरस्वती को अनेक बार विष दिया गया यौगिक क्रियाओं से जिसे उन्होंने दूर कर दिया अनेक पौराणिक मत मतांतरवादी व अंग्रेज भी उनके विरोधी हो गए थे। महाराणा यशवंत राव जोधपुर के यहां महाराज को वेद पर व्याख्यान देते थे उन्होंने महाराज से एक वेश्या नन्हीं जान से सम्पर्क में रहने का विरोध किया। इस पर नन्हीं जान ने रसोइया जगन्नाथ से कहकर उनके भोजन में पिसा कास्य मिलवा दिया। इस पर भी मृत्यु को समीप देखकर रसोइया जगन्नाथ को क्षमादान दिया और वहां से चले जाने को कहा। इसके पश्चात् वहां जब स्थिति में सुधार न हुआ तो अजमेर भेज दिया गया, जहां दीपावली के दिन उन्होंने 'ईश्वर तेरी जैसी इच्छा' कह कर प्राण त्याग दिए।

महर्षि के जीवन चरित्र को देखकर पता चलता है कि उन्होंने कितना त्याग व तप किया, कितने कष्ट सहे अंग्रेजी शासन के रहते स्वराज का उद्घोष किया, वैदिक संस्कृति व संस्कृत के पठन-पाठन हेतु विद्यालय खोले, शुद्धि का द्वार खोला। शास्त्रार्थ किए, वह जीवन भर एक स्थान पर नहीं बैठे, अथक परिश्रम किया, वह जानते थे कि वैदिक संस्कृति का प्रचार न किया तो अंधविश्वास पाखंड तथा मत-मतांतर बढ़ जाएंगे और मानव का भविष्य अंधकार में पड़ जाएगा।

डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह, खुर्जा

रक्त साक्षी पंडित लेखराम आर्य

बलिदान दिवस 3 मार्च
शत्-शत् नमन

पंडित लेखराम आर्य (1858–1897), आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता एवं प्रचारक थे। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार प्रसार में लगा दिया। वे अहमदिया मुस्लिम समुदाय के नेता मिर्जा गुलाम अहमद से शास्त्रार्थ एवं उसके दुस्प्रचारों के खंडन के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उनका संदेश था कि तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बंद नहीं होना चाहिए। पंडित लेखराम इतिहास की उन महान हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दिए। जीवन के अंतिम क्षण तक आप वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे। पंडित लेखराम ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए हिंदुओं को धर्म परिवर्तन से रोका व शुद्धि अभियान के प्रणेता बने। लेखराम का जन्म 8 चैत्र, संवत् 1915 (1858 ई.) को झेलम जिला के तहसील चकवाल के सैदपुर गांव में हुआ था। उनके पूर्वज महाराजा रणजीत सिंह की फौज में थे। उनके पिता का नाम तारा सिंह एवं माता का नाम भाग भरी था। स्वामी दयानंद का जीवनचरित् लिखने के उद्देश्य से उनके जीवन संबंधी घटनाएं इकट्ठी करने के सिलसिले में उन्हें भारत के बहुसंख्यक स्थानों का दौरा करना पड़ा। इस कारण उनका नाम 'आर्य मुसाफिर' पड़ गया। पं लेखराम हिंदुओं को मुसलमान होने से बचाते थे। एक कट्टर मुसलमान ने 3 मार्च सन् 1897 को ईद के दिन, 'शुद्धि' कराने के बहाने, धोखे से लाहौर में उनकी हत्या कर डाली। उस समय वह महर्षि दयानन्द का चरित्र लिख रहे थे इसलिए उन्हें रक्त साक्षी कहा जाता है। उनका कहना था **आर्यसमाज से तहरीर और तकरीर का कार्य बंद नहीं होना चाहिए।**

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

पुण्यतिथि 19 मार्च
शत्-शत् नमन

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी (26 अप्रैल 1864–1890), महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य एवं कालान्तर में आर्यसमाज के प्रमुख नेता थे। उनकी गिनती आर्य समाज के पांच प्रमुख नेताओं में होती है। 26 वर्ष की अल्पायु में ही उनका देहान्त हो गया किन्तु उतने ही समय में उन्होने अपनी विद्वता की छाप छोड़ी और अनेकानेक विद्वतापूर्ण ग्रन्थों की रचना की। अद्भुत प्रतिभा, अपूर्व विद्वत्ता एवं गम्भीर वक्तृत्व-कला के धनी पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुल्तान के प्रसिद्ध 'वीर सरदाना' कुल में हुआ था। इनके पिता लाला रामकृष्ण फारसी के विद्वान थे। वे पंजाब के शिक्षा विभाग में अध्यापक थे। विशिष्ट मेधा एवं सीखने की उत्कृट लगन के कारण वे अपने साथियों में बिल्कुल अनूठे थे। किशोरावस्था में ही उनका हिन्दी, उर्दू, अरबी एवं फारसी पर अच्छा अधिकार हो गया था तथा उसी समय उन्होंने 'द बाइबिल इन इण्डिया' तथा 'ग्रीस इन इण्डिया' जैसे बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ लिये। कॉलेज के द्वितीय वर्ष तक उन्होंने चार्ल्स ब्रेडले, जेरेमी बेन्थम, जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे पाश्चात्य विचारकों के शतश: ग्रन्थ पढ़ लिये। वे मार्च, 1886 में पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. की परीक्षा में सर्वप्रथम रहे। तत्कालीन महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द के कार्यों से प्रभावित होकर उन्होंने 20 जून 1880 को आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। महात्मा हंसराज व लाला लाजपत राय उनके सहाध्यायी तथा मित्र थे। वह 'द रिजेनरेटर ऑफ आर्यावर्त' के सम्पादक रहे। 1884 में उन्होंने 'आर्यसमाज साइंस इन्स्टीट्यूशन' की स्थापना की। दीपावली (1883) के दिन, महाप्रयाण का आलिंगन करते हुए महर्षि दयानन्द के अन्तिम दर्शन ने गुरुदत्त की विचारधरा को पूर्णत: बदल दिया। अब वे पूर्ण आस्तिक एवं भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के प्रबल समर्थक एवं उन्नायक बन गए। वे डीएवी के मंत्रदाता एवं सूत्रधार थे। पूरे भारत में साइंस के सीनियर प्रोफेसर नियुक्त होने वाले वह प्रथम भारतीय थे। उन्होंने कई गम्भीर ग्रन्थ लिखे, उपनिषदों का अनुवाद किया। उनके जीवन में उच्च आचरण, आध्यात्मिकता, विद्वत्ता व ईश्वरभक्ति का अद्भुत समन्वय था। उन्हें वेद और संस्कृत से इतना प्यार था कि वे प्राय: कहते थे कि– 'कितना अच्छा हो यदि मैं समस्त विदेशी शिक्षा को पूर्णतया भूल जाऊं तथा केवल विशुद्ध संस्कृतज्ञ बन सकूं।' 'वैदिक मैगजीन' के नाम से निकाले उनके रिसर्च जर्नल की ख्याति देश-विदेश में फैल गई। यदि वे दस वर्ष भी और जीवित रहते तो भारतीय संस्कृति का बौद्धिक साम्राज्य खड़ा कर देते। पर, विधि के विधान स्वरूप उन्होंने 19 मार्च 1890 को चिरयात्रा की तरफ प्रस्थान कर लिया। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ने 2000 ई. में उनके सम्मान में अपने रसायन विभाग के भवन का नाम 'पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी हाल' रखा है। आर्य समाज को उन पर नाज है। आर्ष गुरुकुल नोएडा के छात्रावास का नाम पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के नाम पर है।

अमर शहीद सुखदेव थापर

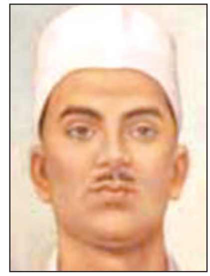

बलिदान दिवस 23 मार्च
शत्-शत् नमन

सुखदेव थापर का जन्म पंजाब के शहर लायलपुर में श्रीयुत् रामलाल थापर व श्रीमती रल्ली देवी के घर विक्रमी सम्वत् 1964 के फाल्गुन मास में शुक्ल पक्ष सप्तमी तदनुसार 15 मई 1907 को अपरान्ह पौने ग्यारह बजे हुआ था। जन्म से तीन माह पूर्व ही पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण इनके ताऊ अचिन्तराम ने इनका पालन पोषण करने में इनकी माता को पूर्ण सहयोग किया। सुखदेव की तायी जी ने भी इन्हें अपने पुत्र की तरह पाला। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिये जब योजना बनी तो साण्डर्स का वध करने में इन्होंने भगत सिंह तथा राजगुरु का पूरा साथ दिया था। यही नहीं, सन् 1929 में जेल में कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार किये जाने के विरोध में राजनीतिक बंदियों द्वारा की गयी व्यापक हड़ताल में बढ़-चढ़कर भाग भी लिया था। गांधी-इर्विन समझौते के संदर्भ में इन्होंने एक खुला खत गांधी के नाम अंग्रेजी में लिखा था जिसमें इन्होंने महात्मा जी से कुछ गंभीर प्रश्न किये थे। उनका उत्तर यह मिला कि निर्धारित तिथि और समय से पूर्व जेल मैनुअल के नियमों को दरकिनार रखते हुए 23 मार्च 1931 को सायंकाल 7 बजे सुखदेव, राजगुरु और भगत सिंह तीनों को लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी पर लटका कर मार डाला गया।

अमर शहीद भगत सिंह

बलिदान दिवस 23 मार्च
शत्-शत् नमन

भगत सिंह (जन्म : 27 सितम्बर 1907, बलिदान : 23 मार्च 1931) भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। भगतसिंह संधु जाट सिक्ख थे उन्होंने देश की आज़ादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुक़ाबला किया, वह भुलाया नहीं जा सकता। इन्होंने केन्द्रीय संसद में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप इन्हें 23 मार्च 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फांसी पर लटका दिया गया। सारे देश ने उनके बलिदान को बड़ी गम्भीरता से याद किया। पहले लाहौर में साण्डर्स की हत्या और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ बम-विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलंदी प्रदान की। भगत सिंह को समाजवादी,वामपंथी और मार्क्सवादी विचारधारा में रुचि थी। अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। लाहौर के नेशनल कॉलेज़ की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आज़ादी के लिये नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी। काकोरी कांड में राम प्रसाद 'बिस्मिल' सहित 4 क्रांतिकारियों को फांसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि पंडित चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड गये और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन।

अमर शहीद शिवराम हरि राजगुरु

बलिदान दिवस 23 मार्च
शत्-शत् नमन

शिवराम हरि राजगुरु (जन्म : 24 अगस्त 1908-बलिदान: 23 मार्च 1931) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी थे। इन्हें भगत सिंह और सुखदेव के साथ 23 मार्च 1931 को फांसी पर लटका दिया गया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में राजगुरु की शहादत एक महत्वपूर्ण घटना थी। शिवराम हरि राजगुरु का जन्म भाद्रपद के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी सम्वत् 1965 में पुणे जिला के खेडा गांव में हुआ था। 6 वर्ष की आयु में पिता का निधन हो जाने से बहुत छोटी उम्र में ही ये वाराणसी विद्याध्ययन करने एवं संस्कृत सीखने आ गये थे। इन्होंने हिन्दू धर्म-ग्रन्थों तथा वेदों का अध्ययन तो किया ही लघु सिद्धान्त कौमुदी जैसा क्लिष्ट ग्रन्थ बहुत कम आयु में कंठस्थ कर लिया था। इन्हें व्यायाम का बेहद शौक था और छत्रपति शिवाजी की छापामार युद्ध-शैली के बड़े प्रशंसक थे। वाराणसी में विद्याध्ययन करते हुए राजगुरु का सम्पर्क अनेक क्रांतिकारियों से हुआ। चन्द्रशेखर आजाद से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उनकी पार्टी हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी से तत्काल जुड़ गये। आजाद की पार्टी के अन्दर इन्हें रघुनाथ के छद्म-नाम से जाना जाता था, राजगुरु के नाम से नहीं। पंडित चन्द्रशेखर आज़ाद, सरदार भगत सिंह और यतीन्द्रनाथ दास आदि क्रांतिकारी इनके अभिन्न मित्र थे।

मूलशंकर से महर्षि दयानन्द

आशा किरण का उदय :

हमारा प्यारा भारत वर्ष पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। राष्ट्रभक्ति सर्वथा क्षीणबल हो चुकी थी। आर्यावर्त की वह पावन भूमि अनेक कुरीतियों के कंटकों से अच्छादित हो चुकी थी। अबल ललनाओं के सजीव शरीर धधकती चिताओं में भस्मीभूत किए जा रहे थे। अस्पृश्यता, बाल-विवाह, अंधविश्वास, अशिक्षा, चमत्कारवाद जैसी कुरीतियों के फलस्वरूप भारतीय समाज दिन प्रतिदिन जड़ता व विघटन को प्राप्त हो रहा था। देश में सर्वत्र अज्ञान, अविद्या के अंधकार का पसारा था। ऐसी ही विकट परिस्थितियों में फाल्गुन कृष्ण दशमी संवत् 1881 तद्नुसार 12 फरवरी 1825 को काठियावाड़ प्रदेश के टंकारा नगर में एक समृद्ध संभ्रांत ब्राह्मण कुल में स्वनामधन्य श्री कर्षण लाल तिवारी के यहां बालक मूलशंकर के रूप में आशा की एक किरण ने जन्म लिया, जिसने कालान्तर में दयानन्द सरस्वती के रूप में दीक्षित होकर विश्व को वैदिक सत्य के प्रकाश से आलोकित कर अज्ञान के गहन गर्त में गिरने से बचाया।

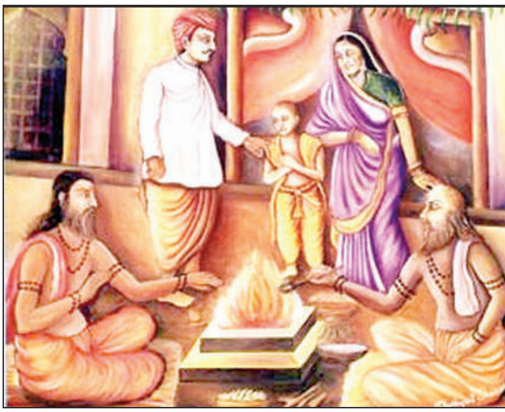

उपनयन संस्कार :

बालक मूलशंकर के पिता कर्षण लाल जी एक धर्म प्रवण, शिवभक्त ब्राह्मण थे। यद्यपि वे जमींदार थे तथापि तत्समय प्रचलित धार्मिक आस्थाओं का स्वयं पालन करने में व परिजनों से पालन करवाने में सर्वदा उद्यत रहते थे । उन्होंने आठ वर्ष की अवस्था में बालक मूल जी का यज्ञोपवीत कराके गायत्री, संध्या और उसकी क्रिया भी सिखा दी। बहुत से धर्म-शास्त्रादि के श्लोक और सूत्रादिक कंठस्थ कराने के साथ यजुर्वेद की संहिता का पाठ भी आरम्भ करा दिया था। पिता श्री सदैव शिवलिंग पूजा व व्रतादि पर जोर दिया करते थे। वस्तुतः पिता मूल जी को भी अपनी तरह ही दृढ़ शैव बनाना तथा शिव निष्ठा के व्रत में दीक्षित करना चाहते थे। उन्हें अपने पुत्र को सम्प्रदाय निष्ठ, धर्मभीरू, कर्मकांड-प्रवण एक आदर्श ब्राह्मण बनाना ही अभीष्ठ था।

प्रबोध भास्कर का उदय :

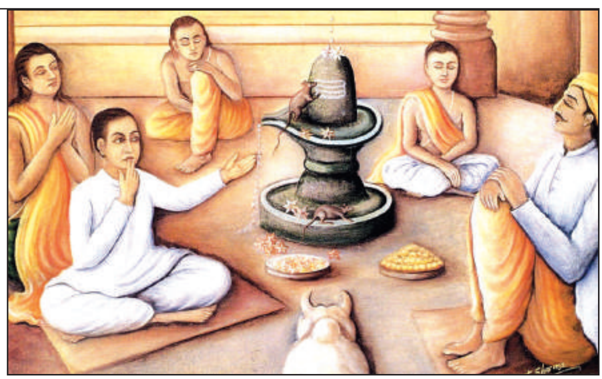

मूलशंकर जी के पिता पक्के शैव थे। मूल जी पर भी वैसे ही संस्कार डालने हेतु वे हर सम्भव प्रयत्न करते थे। पिताश्री की प्रेरणा से मूल जी ने शिवरात्रि में पूरी रात जागकर, निराहार रहकर व्रत रखने का निश्चय किया। फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी सं. 1894 वि. की इस रात्रि में ऐसी अद्भुत घटना घटी जिसने न केवल बालक मूलशंकर की मानसिक दशा में ही परिवर्तन किया अपितु वह उनके भावी कार्यक्रम की रूपरेखा को भी सुनिश्चित कर सकी। शिवालय में समस्त भक्तगण पूर्ण श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना में तल्लीन थे। सारी रात जागरण करना था। परंतु रात्रि के तीसरे पहर तक बालक मूलशंकर को छोड़कर सभी भक्तगण यहां तक कि पुजारी तथा कर्षण लाल जी भी निद्रा देवी के पाश में आबद्ध हो गये। तभी मूल जी ने देखा कि चूहे आकर शिवलिंग पर उछल कूद मचाने लगे। दयानन्द के चिदाकाश में संचरित विचार तरंगे और प्रश्न के सितारे सर्वशक्तिमान कहे जाने वाले त्रिशूलधारी शिवजी पर उछलकूद करते क्षुद्र प्राणियों को देखकर चमक उठे। पिताश्री को जगाकर समाधान चाहा पर संतुष्ट न हो सके, अतएव व्रत तोड़कर घर चले आए। यह घटना मूलशंकर के जीवन को असाधारण मोड़ देने में सफल हुई। जड़पूजा की निस्सारता का निश्चय हुआ व सच्चे शिव के दर्शन का संकल्प जागृत हुआ। यहीं से उन्हें बोध हुआ।

पं. चमूपति जी के महर्षि के प्रति प्रेरणादायक उद्गार

पं. चमुपति जी लिखते हैं कि आज केवल भारत ही नहीं सारे संसार पर स्वामी दयानन्द का सिक्का है। मतों के प्रचारकों ने अपने मंतव्य बदल लिए हैं,धर्म पुस्तकों का संशोधन किया है, महापुरुषों की जीवनियों में परिवर्तन किया है। स्वामी जी का जीवन इन जीवनियों में बोलता है। ऋषि मरा नहीं करते, अपने भावों के रूप में जीते हैं।

दलितोद्धार का प्राण कौन है? पतित पावन दयानन्द। समाज सुधार की जान कौन है? आदर्श सुधारक दयानन्द। शिक्षा के प्रचार की प्रेरणा कहां से आती है? गुरुवर दयानन्द के आचरण से। वेद का जय-जयकार कौन पुकारता है? ब्रह्मर्षि दयानन्द। माता आदि देवियों के सत्कार का मार्ग कौन सिखाता है? देवी पूजक दयानन्द। गोरक्षा के विषय में प्राणिमात्र पर करुणा दिखाने का बीड़ा कौन उठाता है? करुणानिधि दयानन्द। आओ हम अपने आप को ऋषि दयानन्द के रंग में रंगे। हमारा विचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचार ऋषि आचार हो, हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो। हमारी प्रत्येक चेष्टा ऋषि की चेष्टा हो। नाड़ी-नाड़ी से धवनि उठे।

महर्षि दयानन्द पापों और पाखंड़ों से ऋषि राज छुड़ाया था तूने। भयभीत निराश्रित जाति को, निर्भिक बनाया था तूने।। बलिदान तेरा था अदिव्तीयहो गई दिशाएं गुंजित थी। जन-जन को देगा प्रकाश वह दीप जलाया था तूने।।

हमारा सौभाग्य है और अपने इस सौभाग्य पर हमें गर्व है कि हम महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित ईश्वरीय ज्ञान वेदों के अनुयायी हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्षित मार्ग ऐहिक व पारलौकिक उन्नति अथवा अभ्युदय व नि:श्रेयस प्राप्त कराता है। इसे यह भी कह सकते है कि वेद मार्ग योग का मार्ग है। जिस पर चलकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होती है। संसार की यह सबसे बड़ी सम्पदाये हैं। अन्य सभी भौतिक संपदाये तो नाशवान हैं परन्तु दयानन्द जी द्वारा दिखाई व दिलाई गई संपदाये जीते जी तो सुख देती हैं मरने के बाद भी लाभ ही लाभ पहुंचाती है। आत्मजोत काव्य के माध्यम से पंडित जी स्वामी दयानन्द की श्रद्धांजलि देते है।

लगे मेरे स्वामी को छाले सताने। लगे बीसियों दस्त उन्हें जोर आने॥
किया जहर का काम उल्टा दवा ने। न आई तबिअत, न आई
ठिकाने॥ ऋषिवर की किस्मत के थे फेर उल्टे।
मुआलज थे हमराज सब नन्ही जां के॥

रहे दस्त पर दस्त हर रोज जारी। लगी बेहोशी रह-रह के तारी॥ हरारत से
बढ़ती गई बेकरारी। ऋषि की हुई लागू शामत हमारी॥ फफोले उठे नाफ
से थे जबाँ तक। जिगर से यही सोज पहुंचा था जां तक॥

वोह स्वामी जो हाथी की ताकत था रखता। उठी तेग को हाथ से टुकड़े
करता॥ था बेखौफ राजों के सिर पर गर्जता। था लाचार खटिया पे आज
आह! लेटा॥ तड़पते कटी दर्द से सत्रह रातें। न आराम आया जरा जोधपुर में॥

लगे कहने स्वामी चलीं कोह आबू। नहीं चैन आने का या कोई पहलू॥
हवा में होता है पहाड़ों की जादू। कहीं रोग का मेरे शायद हो दारू॥ लगे
राजा रोने 'कटी नाक मेरी। ऋषि जो गये राज से मेरे रोगी॥'

ऋषि को सुलाया गया पालकी में। था डूबा खड़ा राजा शर्मिंदगी में ॥
न रखा दकीका उठा बंदगी में। कहा पाओं पर गिर के अरमां है जी में॥
जो सेहत में करता ऋषिवर को रुख़सत। न यूं पाओं पड़ने में होती नदामत॥
किसी डाक्टर ने जो स्वामी को देखा। कहा तेरा साधु जिगर है ग़ज़ब का॥

तू इस दर्द में है ज़मीयत से जीता। नहीं उफ़ ज़बाँ से तेरी कोई सुनता॥
गये कोह आबू से अजमेर स्वामी। इशारे में करते थे शीरीं कलामी॥
कहा एक दिन कोई नाईं बुलाओ। हमें आज पानी से मिलकर नहाओ॥ जो
खाना कि हो सबसे शीरीं पकाओ। हलावत का इक ख़ांनचा भरके लाओ॥

**थे सब शुक्र करते, है हाल आज अच्छा। खबर क्या? संभाला
था बीमार लेटा॥ नहा कर जमाया ऋषिवर ने आसन। हुए
ध्यान में महव खुलवा के रोज॥ सुरें वेद की मीठी-मीठी
नवाज़न। पकड़ती थी अनवारे रहमत का दामन॥**

रजा पर कहा तेरी साईं! हूं राजी। वोह लो! आत्मा सांस के साथ चल दी॥
ऋषि चैन से आख़री नींद सोया। था चेहरे पे नूर अब भी उसके चमकता॥
गुरुदत्त कि रखते थे ईमान बोदा। समां देखकर उन पे छाया अचम्भा॥
कहा मर के भी तुम नहीं स्वामी मरते। हैं मुर्दा हम जैसे मरने से डरते॥

ज़मी आई कहती यह मिट्टी है मेरी। ख़ला में ख़ला, बाद में बाद पहुंची॥
यह कहती हुई आग वेदी से उठी। हमारा महर्षि! हमारा महर्षि॥ किया
मौत ने तेरी हर सू उजाला। दयानन्द स्वामी! तेरा बोल बाला॥

निराले दयानन्द : निराला व्यक्तित्व

महर्षि स्वामी यानन्द दुनिया की एक निराली शख्सियत हैं। जैसे चमकने वालों में सूर्य, हाथियों में एरावत, भौतिक पदार्थों में रत्न, वीरों में जामदग्नय, आदर्श पुरुषों में राम, नीतिज्ञों में चाणक्य, योगेश्वरों में कृष्ण तथा शीतलतत्वों में चंद्रमा को निराला माना जाता है इसी प्रकार यह महापुरुष भी निराला है। अलंकारों में एक अलंकार है अनन्वय। इसमें उदाहरण में उपमेय और उपमान का अभेद रहता है। यथा 'राम: रावणयोर्युद्धम् रामरावणयोरिव' अर्थात राम-रावण का युद्ध राम और रावण जैसा था। महर्षि दयानन्द भी ऐसे थे। उनके लिए भी 'दयानन्दो दयानन्द इव' ही कहना पड़ेगा। सचमुच दयानन्द दयानन्द जैसे ही थे। वे सैंकड़ों में भी निराले, सहस्त्रों में भी निराले, लाखों में भी निराले, करोड़ों में भी निराले, यहां तक कि विश्व के समस्त मानवों में भी निराले हैं। कई बार मन में आता है कि उन्होंने माता-पिता की सेवा नहीं की यह उनके जीवन में एक त्रुटि सी लगती है। किन्तु-माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्या:।

सारी धरती मेरी माता है और मैं हूं इस पृथ्वी का पुत्र। इस संस्कृति का उपासक जब समस्त धरा की सेवा करने के लिए निकल पड़ा तो जननी माता भी उससे बाहर कहां रही? कई बार मन कहता है कि दयानन्द ने माता पिता की इच्छा के विरुद्ध घर छोड़कर अच्छा नहीं किया। किन्तु तुरंत मन कहता है कि उच्च आदर्श तथा उच्च विचारों के सामने परिवार से भी अधिक लोकहित रहता है। इस लोकहित की प्रबल इच्छा ने ही दयानन्द को अनूठा बना दिया। नि:संदेह हर गुण में अनूठे, हर व्यक्तित्व से निराले थे ऋषि दयानन्द।

निराले दयानन्द - वेद भाष्यकारों में : महर्षि दयानन्द वेद भाष्यकारों में भी अपना विशेष स्थान रखते हैं। उनके वेद भाष्य की विशिष्टता यह है कि उन्होंने वेदों को वेदों से देखा। वे 'वेद एव वेदस्यौपाध्याय:' को मानने वाले थे जबकि अन्य वेदभाष्यकारों ने अधिकतर लौकिक मान्यताओं से वेद को देखा। लोक में जाकर वैदिक मन्तव्य अपने लक्ष्य से कैसे दूर चले जाते हैं इसे वामन प्रसंग से समझा जा सकता है जिसमें वामन होते हुए भी विष्णु तीन पगों में धरती, अंतरिक्ष तथा द्युलोक को नाप लेते हैं। यजुर्वेद के 'दिवि विष्णुर्व्यक्रस्त' मंत्र से इस कथा का विकास हुआ है। पौराणिक कथाअनुसार राजा बलि यज्ञ करता है। उससे भयभीत देवगणों की रक्षार्थ भगवान विष्णु वामन का रूप धारण करके वहां जाते हैं तथा उसका यज्ञ विध्वंस करने के लिए उससे तीन पग भूमि मांगते हैं। बलि सहर्ष उनकी मांग स्वीकार कर लेते हैं। विष्णु एक पग से भूमि, दूसरे से अंतरिक्ष तथा तीसरे से द्युलोक को नाप लेते हैं तथा बलि को पाताल में पहुंचा देते हैं। यह भी संभव है कि पूर्व विद्वानों का इस कथा को बनाने में यह भाव न रहा हो किन्तु कालांतर में पुराणादि में यही भाव दिखाई देते हैं। यह कथा अनेक प्रश्न खड़े कर देती है। यथा, यज्ञ करने की वेद की आज्ञा है उसे चाहे कोई करे। यदि बलि वेदाज्ञा मानकर यज्ञ करता था तो विष्णु को उस में सहायक बनना चाहिए था विध्वंसक नहीं। क्योंकि रामायण काल में विश्वामित्र के यज्ञ को विध्वंस करने वालों को राक्षस कहा गया है। फिर भगवान विष्णु ने ऐसा क्यों किया? वेद यज्ञ का विधान करता है। शतपथ उसे श्रेष्ठतम कर्म कहता है फिर उसका विध्वंसक भगवान कैसे हुआ? दूसरे वह व्यक्ति जिसने धरती पर खड़े ही तीन लोकों को नाप लिया वह लंबा चौड़ा कितना होगा तथा खड़ा कहां हुआ होगा? यजुर्वेद के भाष्यकार उव्वट, महीधर ने उपर्युक्त अर्थ लोक को देखकर किया जबकि वेद मंत्र का तात्पर्य कुछ और था। शतपथ ने इसे कथा का रूप तो दिया किन्तु सत्य अर्थ को समझाने के लिए।

इंद्रियनिग्रह सबसे बड़ा तप है। अथर्ववेद ने 'ब्रम्हचर्येन तपसा' कहकर ब्रह्मचर्य को तप बतलाया है। इन दोनों ने इस तप को निष्कलंक होकर तपा। किन्तु यदि उद्देश्य की दृष्टि से देखा जाए तो इनके तथा देव दयानन्द के उद्देश्य में बहुत अंतर है। देव दयानन्द के आगे न तो अहम् की बाधा थी और न परिवार के किसी व्यक्ति का सुख विशेष। सच्चे शिव के दर्शन करने की, योग द्वारा आत्मा तथा परमात्मा के साक्षात्कार की, गौ, विधवा तथा अनाथों की हीन अवस्था की, देश की पराधीनता की, नारी, दलित, अछूतों की दुरवस्था की, सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत में बिना कफन के बहाई जाने वाली लाशों की तथा अज्ञान व पाखंडों की समस्या थी।

निराले दयानन्द - गुरुओं में : महर्षि दयानन्द गुरुओं में निराले हैं। गुरुओं की पहचान जहां उनके अगाध ज्ञान, सन्मार्गदर्शन तथा शिष्यों के जीवन में उज्जवल क्रांति से होती है

वहां उनके परमेश्वर का सच्चा ज्ञान कराने से भी होती है। महर्षि उन दोनों ही बातों में अनूठे हैं। उनकी शिष्य परम्परा स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, लाजपतराय, श्यामजी कृष्ण वर्मा एवं महात्मा हंसराज आदि महान व्यक्तित्वों से सम्पन्न है। श्रद्धानन्द का पहला नाम मुंशीराम था। पेशे से वकील, विपुल सम्पदा के स्वामी, किले जैसी कोठी, निजी प्रेस, अंग्रेजी जीवन शैली के समर्थक, ऐशो–आराम का जीवन जीने की उत्कट अभिलाषा, मद्य–मांस के प्रेमी व परले दर्जे के नास्तिक–ये सब थे मुंशीराम, निराले दयानन्द का संस्पर्श मिलने से पहले। बरेली में ज्यों ही ऋषि जी का सत्संग मिला कि नास्तिक, मद्य–मांस व अंग्रेजियत के समर्थक तथा विपुल धन संपदा के मालिक मुंशीराम देखते–ही–देखते सर्वत्यागी महात्मा मुंशीराम व पश्चात स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। अपना धन–वैभव व तन–मन दयानन्द मिशन को भेंट कर अपने दोनों पुत्रों को भी 'इदम् दयानन्दाय इदन्नमम' कह कर दयानन्द के कार्य के लिए समर्पित कर दिया। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके दयानन्द के सपनों को साकार रूप दिया। उन्होंने महर्षि द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करके हिन्दी प्रचार, अछूतोद्धार, शुद्धिप्रचार, कन्या शिक्षण के साथ ही भारत की स्वतंत्रता में अग्रणी बनकर कार्य किया। जलियांवाला बाग के रक्त से रंगे भयभीत अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन कराकर इन्होंने पंजाब में पुन: निर्भीकता की लहर जगाई। जामा मस्जिद तथा फतेहपुरी मस्जिद दिल्ली में मिम्बर से वेद मंत्र बोलकर मुस्लिम जनता को संबोधित करने का अपूर्व ऐतिहासिक उदाहरण स्वामी श्रद्धानन्द ने दिया। महर्षि का ही प्रभाव था जो प्रारम्भ का निम्न तथा व्यसन भरा जीवन इतना निर्मल हो गया कि चंद्रमा में तो कलंक मिलता है किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन सूर्य की रश्मियों तथा वेद की ऋचाओं जैसा पावन है।।

महर्षि दयानन्द के दूसरे शिष्य पंडित लेखराम जी थे। वह पुलिस विभाग में थे। उन दिनों पुलिस की नौकरी बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती थी। पुलिस का रौब आजकल के अधिकारियों से कम न था। महर्षि दयानन्द के संपर्क में आने पर इन्होंने नौकरी छोड़ दी और प्राणपण से आर्यसमाज के कार्य में लग गए। वे लेखन तथा भाषण दोनों के धनी थे। इनका लिखा साहित्य असत्य को मिटाने में रामबाण का कार्य करता है।

इनके तीसरे शिष्य गुरुदत्त विद्यार्थी थे – अप्रतिम प्रतिभा के धनी, विज्ञान से एम.एस.सी.। उनका जीवन चरित्र पढ़ने से ज्ञात होता है कि इनकी स्मृति इतनी आश्चर्यजनक थी कि एक बार पढ़ी पुस्तक में यह बता देते थे कि अमुक विषय अमुक पृष्ठ पर है। इन्होंने वेद मंत्रों के आधार पर अनेक वैज्ञानिक तथ्य उपस्थित करके विज्ञान के विद्वानों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था। पाश्चात्य विश्वविद्यालयों में इनकी पुस्तकें विशिष्ट रूप से पढ़ी जाती थीं। अपना जीवन महर्षि के कार्य को समर्पित करके इन्होंने अहर्निश इतना परिश्रम किया कि इनका कठोर शरीर भी कार्याधिक्य को सहन न कर पाया और 28 वर्ष की अल्प आयु में उन्होंने अपने मन तथा धन के साथ ही अपने तन को भी 'इदम् दयानन्दाय इदम् न मम्' कहकर महर्षि के कार्यों को आगे बढ़ाने में होम दिया। श्यामजीकृष्ण वर्मा को महर्षि ने वैदिक सभ्यता का प्रचार, प्रसार तथा स्वतंत्रता आंदोलन का सूत्रपात करने के लिए विदेश भेजा था।

निराले दयानन्द - समाज सुधारकों में : समाज सुधारको में भी दयानन्द निराले थे। यहां अन्य भी अनेक समाज सुधारक हुए तथा उन्होंने समाज सुधार का प्रशंसनीय कार्य किया। कबीर ने मूर्ति पूजा को निरर्थक बताते हुए कहा था–पत्थर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार।इससे तो चक्की भली पीस खाए संसार।। नरसी भक्त भी पत्थर पूजा एवं स्नान को व्यर्थ मानते थे। ऊंच–नीच, जात–पात, छुआछूत का अनेक सुधारकों ने विरोध किया। राजा राममोहन राय ने सती–प्रथा को वैधानिक रुप से बंद कराने में सराहनीय कार्य किया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर का विधवा विवाह कार्य भी प्रशंसनीय था। किन्तु पण्डित वर्ग इन सब कार्यों को सुनकर कह देता था कि बकने दो, मूर्ख हैं। जब वेदों में ऐसा करना लिखा है तो इनकी बातों का क्या प्रमाण? जैन तथा बौद्धों ने यज्ञ में पशुहिंसा का जमकर विरोध किया। वे सब यही कहते थे कि इनके कहने से क्या होता है जब वेद में पशु को मारकर उससे होम करने का विधान है। अकेले दयानन्द ही ऐसे आचार्य हुए हैं जिन्होंने समस्त कुरीतियों का वेदों के आधार पर खण्डन किया तथा पंडितों को चुनौती दी ऐसा वेद में कहां है? पंडित वर्ग जिन मंत्रों में अवतारवाद, मूर्तिपूजा, सतीप्रथा या पशुहिंसा आदि का विधान मानता था महर्षि ने उन मंत्रों के सत्य अर्थ करके बताया कि इन मंत्रों में इन कुरीतियों का लेशमात्र भी उल्लेख नहीं है। यह उनको समाज सुधारको में निराला सिद्ध करता है। ■■

महर्षि स्वामी दयानन्द की दृढ़ता

लाहौर के अंदर महर्षि दयानन्द जी के व्याख्यान चल रहे थे। वह एक बार एक शिव मंदिर में ठहरे। उसमें अच्छी लंबी-चौड़ी जगह देखकर महर्षि दयानन्द जी के शिष्यों ने मंदिर के पुजारी से कहा कि स्वामी जी के व्याख्यान यहीं हो जाए तो अच्छा है।

पुजारी जी प्रसन्न होकर बोले कि बहुत अच्छा रहेगा। मैं स्वामी जी के लिए ठहरने की उचित व्यवस्था किए देता हूं। सारी व्यवस्था हो गई। स्वामी जी ने वहीं भोजन किया और रात्रि को व्याख्यान हुआ, जिसमें लगभग 20,000 लोग उपस्थित थे। स्वामी जी ने उस दिन अपने व्याख्यान में मूर्ति पूजा का जोरदार खंडन किया। मंदिर में रहने वाले साधु और पुजारी सभी दंग रह गए।

सोचने लगे कि यह तो बहुत विचित्र साधु है। हमने इसकी भरपूर सेवा की और यह तो हम पर ही कुल्हाड़ी चला रहा है। सब मंदिर वाले नाराज हो गए और फैसला कर लिया कि कल से इस साधु के व्याख्यान यहां नहीं होने देंगे। उस दिन स्वामी जी के व्याख्यान में मुसलमान भी थे। वे मूर्ति पूजा के खंडन को सुनकर बहुत प्रसन्न हो रहे थे।

अगले दिन जब पुजारी ने मना कर दिया तो स्वामी जी के शिष्य जगह तलाश करने लगे। तभी एक मुसलमान वहां आया और बोला कि आज का व्याख्यान हमारे यहां करवाओ और स्वामी जी के ठहरने की पूरी व्यवस्था मैं कर देता हूं। सबने उसकी बात को स्वीकार करके स्वामी जी की अनुमति ले ली।

रात को जब व्याख्यान हुआ तो लगभग 30,000 लोग इकट्ठे थे। उस दिन वहां मुसलमानों की संख्या बहुत अधिक थी। स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में कुरान की पोल खोलनी शुरू कर दी और मुसलमानों को पूरी तरह नंगा कर दिया। मुसलमानों के कान खड़े हो गए। वे कहने लगे कि इसे कुरान की धज्जियां उड़ाने को तो हमने नहीं बुलाया। हमने तो बहुदेवतावाद और पत्थर पूजा पर बोलने को बुलाया था। परंतु यह तो बिल्कुल उल्टा हो रहा है। इसे रोको और व्याख्यान बंद कराओ। परंतु स्वामी जी को रोके कौन, बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे?

स्वामी जी का व्याख्यान चलता रहा और पूरे 3 घंटे तक चला। जनता चुपचाप बैठी थी। एक भी आदमी हिला नहीं। स्वामी जी ने अपनी वाणी को विराम दिया और मंच से उतरे तो वही आदमी जो स्वामी जी को अपने यहां लाया था और सारी व्यवस्था की थी। वह हाथ जोड़कर बोला कि स्वामी जी मुझे तो आपने कहीं का भी नहीं छोड़ा। सब मुसलमान मुझसे नाराज हैं कि यह किसको बुला ले आया?

उस समय स्वामी जी के पास हजारों की भीड़ थी। स्वामी जी के दर्शन के लिए लोग खड़े थे। वह सब भी इस प्रतीक्षा में थे कि स्वामी जी इस मुसलमान की बात का क्या उत्तर देते हैं? स्वामी जी ने कहा कि भाई तुम्हें मेरे व्याख्यान का कोई कष्ट नहीं होना चाहिए। मैं जिसका अन्न खाता हूं तो उसके बदले में उसका हित अवश्य करता हूं। कल मैंने मंदिर वालों का अन्न खाया तो उनको सच्चा रास्ता दिखा कर उनका उपकार करना

महर्षि दयानन्द जी के शिष्यों ने मंदिर के पुजारी से कहा कि स्वामी जी के व्याख्यान यहीं हो जाए तो अच्छा है। पुजारी जी प्रसन्न होकर बोले कि बहुत अच्छा रहेगा। मैं स्वामी जी के लिए ठहरने की उचित व्यवस्था किए देता हूं। सारी व्यवस्था हो गई। स्वामी जी ने वहीं भोजन किया और रात्रि को व्याख्यान हुआ, जिसमें लगभग 20,000 लोग उपस्थित थे। स्वामी जी ने उस दिन अपने व्याख्यान में मूर्ति पूजा का जोरदार खंडन किया। मंदिर में रहने वाले साधु और पुजारी सभी दंग रह गए। सोचने लगे कि यह तो बहुत विचित्र साधु है। हमने इसकी भरपूर सेवा की और यह तो हम पर ही कुल्हाड़ी चला रहा है। सब मंदिर वाले नाराज हो गए और फैसला कर लिया कि कल से इस साधु के व्याख्यान यहां नहीं होने देंगे। उस दिन स्वामी जी के व्याख्यान में मुसलमान भी थे। वे मूर्ति पूजा के खंडन को सुनकर बहुत प्रसन्न हो रहे थे। अगले दिन जब पुजारी ने मना कर दिया तो स्वामी जी के शिष्य जगह तलाश करने लगे।

आवश्यक था और आज आपका अन्न खाया तो आपको सच्चा रास्ता दिखाना आवश्यक था।

मैंने कुछ गलत कहा हो तो बताओ? स्वामी जी का उत्तर सुनकर सब लोग चुपचाप चले गए। 'यह थी स्वामी जी की दृढ़ता और सत्यता। वे सत्य से कभी डिगे नहीं। ऐसे थे हमारे सत्य के प्रबल समर्थक और पाखंड संहारक महर्षि दयानंद। सत्य से अवगत और वेदों से परिचित कराने वाले उन महान युग प्रवर्तक को बारम्बार नमन है।'

अकबर को जब वीर हिन्दू रमणी किरण देवी ने सबक सिखाया था

किरण देवी बाजार की एक हीरों की दुकान पर खड़ी कुछ देख रही थी। आयशा वहां पहुंची। धीरे से बोली-'इस दुकान पर साधारण हीरे ही मिलते हैं। चलो, मैं तुम्हें कोहिनूर हीरा दिखाऊंगी।' किरण देवी तो अवसर की तलाश में थी। आयशा के पीछे-पीछे चल दी। उसे एक कमरे में ले गई। अचानक अकबर कमरे में आ पहुंचा। पलक झपकते ही किरण देवी सब कुछ समझ गई। बोली 'ओह मैं आज दिल्ली के बादशाह के सामने खड़ी हूं।' अकबर ने मीठी-मीठी बातें कर जैसे ही हिन्दू ललना का हाथ पकड़ना चाहा कि उसने सिंहनी का रूप धारण कर, उसकी टांग में ऐसी लात मारी कि वह जमीन पर आ पड़ा।

अकबर घोर विलासी, अय्याश बादशाह था। वह एक ओर हिन्दुओं को मायाजाल में फंसाने के लिए 'दीने इलाही' के नाम पर माथे पर तिलक लगाकर अपने को सहिष्णु दिखाता था, दूसरी ओर सुन्दर हिन्दू युवतियों को अपनी यौनेच्छा का शिकार बनाने की जुगत में रहता था।

दिल्ली में वह 'मीना बाजार' लगवाता था। उसमें आने वाली हिन्दू युवतियों पर निगाह रखता था। जिसे पसंद करता था उसे बुलावा भेजता था। डिंगल काव्य सुकवि बीकानेर के क्षत्रिय पृथ्वीराज उन दिनों दिल्ली में रहते थे। उनकी नवविवाहिता पत्नी किरण देवी परम धार्मिक, हिन्दुत्वाभिमानी, पत्नीव्रता नारी थी। वह सौन्दर्य की साकार प्रतिमा थी। उसने अकबर के मीना बाजार के बारे में तरह-तरह की बातें सुनीं। एक दिन वह वीरांगना कटार छिपाकर मीना बाजार जा पहुंची। धूर्त अकबर पास ही में एक परदे के पीछे बैठा हुआ आने-जाने वाली युवतियों को देख रहा था। अकबर की निगाह जैसे ही किरण देवी के सौन्दर्य पर पड़ी वह पागल हो उठा। अपनी सेविका आयशा को संकेत कर बोला 'किसी भी तरह इस मृगनयनी को लेकर मेरे पास आओ मुंह मांगा इनाम मिलेगा।'

किरण देवी बाजार की एक हीरों की दुकान पर खड़ी कुछ देख रही थी। आयशा वहां पहुंची। धीरे से बोली-'इस दुकान पर साधारण हीरे ही मिलते हैं। चलो, मैं तुम्हें कोहिनूर हीरा दिखाऊंगी।' किरण देवी तो अवसर की तलाश में थी। आयशा के पीछे-पीछे चल दी। उसे एक कमरे में ले गई।

अचानक अकबर कमरे में आ पहुंचा। पलक झपकते ही किरण देवी सब कुछ समझ गई। बोली 'ओह मैं आज दिल्ली के बादशाह के सामने खड़ी हूं।' अकबर ने मीठी-मीठी बातें कर जैसे ही हिन्दू ललना का हाथ पकड़ना चाहा कि उसने सिंहनी का रूप धारण कर, उसकी टांग में ऐसी लात मारी कि वह जमीन पर आ पड़ा। किरण देवी ने अकबर की छाती पर अपना पैर रखा और कटार हाथ में लेकर दहाड़ पड़ी-'कामी आज मैं तुझे हिन्दू ललनाओं की आबरू लूटने का मजा चखाये देती हूं। तेरा पेट फाड़कर रक्तपान करूंगी।'

धूर्त अकबर पसीने से तरबतर हो उठा। हाथ जोड़कर बोला-मुझे माफ करो, रानी। मैं भविष्य में कभी ऐसा अक्षम्य अपराध नहीं करूंगा। किरण देवी बोली-'बादशाह अकबर, यह ध्यान रखना कि हिन्दू नारी का सतीत्व खेलने की नहीं उसके सामने सिर झुकाने की बात है।' अकबर किरण देवी के चरणों में पड़ा थर-थर कांप रहा था और मीना बाजार के नाटक पर सदा सदा के लिए पटाक्षेप पड़ गया था।

एक कवि ने उस स्थिति का चित्र इन शब्दों में खींचा है-

सिंहनी-सी झपट, दपट चढ़ी छाती पर,
मानो शठ दानव पर दुर्गा तेजधारी है।
गर्जकर बोली दुष्ट! मीना के बाजार में मिस,
छीना अबलाओं का सतीत्व दुराचारी है।
अकबर! आज राजपूतानी से पाला पड़ा,
पाजी चालबाजी सब भूलती तिहारी है।
करले खुदा को याद भेजती यमालय को,
देख! यह प्यासी तेरे खून की कटारी है।

देश विभाजन के पश्चात ऐसे प्रेरणादायक प्रसंगों को पाठ्यक्रम में इसलिए शामिल नहीं किया गया क्यूंकि इनसे सेक्युलर देश की छवि धूमिल हो जाती। जब हम ऐसे प्रसंगों को पाठ्यक्रम में शामिल करने का आग्रह करते हैं तो कुछ छदम लोग इसे शिक्षा का भगवाकरण बताते हैं। यह मेरे देश का दुर्भाग्य है कि यहां पर इतिहास सत्य के आधार पर नहीं अपितु खुशामद के आधार पर लिखा जाता हैं।

■■ डॉ विवेक आर्य

गीता में ज्ञान-विज्ञान योग

गीता के अनुसार व्यक्ति के द्वारा अपने मन को केंद्रित कर लेने पर तथा स्थिरतापूर्वक उसके अनंत स्वरूप का ध्यान करना सीख लेने पर उसको शुद्ध चैतन्य की अनुभूति होने लगती है। यह अनुभूति जब पूर्ण ज्ञान का रूप धारण कर लेती है, उस समय उसको कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता है। समस्त प्रकार के बौद्धिक अन्वेषण संसार के पीछे के तृप्तिदायक सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति से सम्पन्न होते जाते हैं, किंतु इस प्रकार की सिद्धि की प्राप्ति सभी के द्वारा सम्भव नहीं होती है। गीता में स्पष्ट किया गया है कि सहस्रों मनुष्यों में कोई एक मनुष्य ही सिद्धि को प्राप्त करने हेतु प्रयत्न करता है। उन प्रयत्नशीलों में कोई एक व्यक्ति ही परमात्मा को तत्वानुसार जान पाता है-

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चित् यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्वतः॥ गीता 7/3

परमात्मा की प्रकृति परा तथा अपरा दो भागों में विभक्त है। इन दोनों प्रकृतियों का सम्यक् ज्ञान हो जाने पर परमात्मा विषयक ज्ञान दुष्कर नहीं होता है। गीता में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि तथा अहंकार में परमात्मा को अष्ट प्रकृतियां बतलायी हैं-

भूमि रापोऽनलो वायुः श्वंमनो बुद्धि रेवच। अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृति अष्टधा॥ गीता-7/4

ये अष्ट प्रकृतियां ही परमात्मा की अपरा प्रकृति है तथा इससे भिन्न परा प्रकृति कही गयी है-

अपरोऽयमितस्त्वन्यां विद्धि में पराम्। जीवभूतां महाबाघे ययेदं धार्यते जकत॥ गीता-7/5

डॉ. मंजु नारंग, डी.लिट.

अतएव परमात्मा की प्रकृति को परा तथा अपरा दो पक्ष हैं। अपरा प्रकृति यह भौतिक जगत है तथा परा प्रकृति हमारे अंदर का जीवन तत्व है। परमात्मा क समक्ष ये दोनों प्रकृतियां जीवन-मरण, सुख-दुःख की क्रीडा क्रिया करती हैं। प्रत्येक प्राणी में एक ही चेतन विद्यमान होती है तथा यह व्यष्टि एवं समष्टि दोनों का आधार है। परम चैतन्य से ही सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्न होती है। सृष्टि अनन्त चैतन्य में ही क्रीडा करती है। इस महान से पृथक सृष्टि या अस्तित्व सम्भव नहीं है। शुद्ध अनंत चैतन्य हमारे समस्त विचारों, भावनाओं तथा इंद्रिय ज्ञान को अनंत प्रकाशक है। हमको केवल पदार्थों का ज्ञान होता है। हम दृश्य रहित शुद्ध चैतन्य का अनुभव नहीं कर पाते हैं। इस तथ्य को गीता में स्पष्ट किया गया है कि परमात्मा की गुणमयी दैवी माया का दुस्तर है। परमात्म परायण व्यक्ति ही इसको प्राप्त कर सकता है-

दैवी हयेषा गुणमयी ममममाया दुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥ गीता-7/4

आत्मा में भक्ति ही आत्मा की प्राप्ति का मार्ग है। जब तक साधक आत्मा का प्रत्यक्ष भावातीत अनुभव प्राप्त नहीं कर पाता है, तब तक समर्पण तथा त्याग की भावना उत्कट तथा तीव्र रूप धारण नहीं कर पाती है। इस संसार में परमात्मा ही सर्वस्व है, इस प्रकार का अनुभव हो जाने पर ज्ञानी अपनी अंतरात्मा के साथ ही सर्वात्मा के साथ पूर्ण तादाम्य स्थापित कर पाता है। जब हम किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का निश्चय करते हैं, तब उसके साथ ही लक्ष्य की प्राप्त में हमारी आस्था एवं विश्वास में वृद्धि होती है। यह विश्वास ही हमारी सफलता का मूलाधार होता है। इंद्रियों को संयमित करना, मन को शांत करना तथा बुद्धि को शुद्ध रखना ही सम्पूर्ण आध्यात्मिक साधना है।

आध्यात्म विज्ञान अपूर्णत्व से पूर्णत्व तथा मृत्यु से अमरत्व की प्राप्ति में हमारी सहायता करता है। शुद्ध चैतन्य की अवस्था के बोध के उपाय को जानने की उत्सुकता होती है। गीता में स्पष्ट किया गया है कि विनष्ट पापों वाले, द्वन्द्व तथा मोह में मुक्त तथा दृढ़ निश्चयी व्यक्ति परमात्मा की आराधना में तत्पर होते हैं-

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्। ते द्वन्द्वमोहविनिर्मुक्ता मजन्ते मां दृढ़व्रताः॥ गीता-7/28

इस प्रकार की स्थिति की प्राप्त ज्ञान के द्वारा ही सम्भव होती है। इस स्थिति में अगर जीव स्वयं को परा प्रकृति में लीन कर देता है। ब्रह्म की परा प्रकृति के सम्पर्क में आने से जीव ब्रह्म की जड़ प्रकृति का परित्याग करके वह दिव्य शक्ति के साथ सम्बद्ध होता है। इस प्रकार से उसका नवीन दिव्य जन्म तथा कर्म आरम्भ होता है। यह स्थिति ज्ञान के द्वारा सम्भव होती है, ज्ञान योग भी यही है।

स्वामी भीष्म जी महाराज

स्वामी भीष्म जी का जन्म 7 मार्च 1859 में एक निर्धन पांचाल ब्राह्मण परिवार में हुआ। पिता का नाम बारू राम माता का नाम पार्वती देवी था। सन् 1878 में क्रांतिकारियों से मिलकर एक योजना के तहत फौज की 62 नम्बर पलटन में भर्ती हो गए, लगभग डेढ़ दो साल के बाद वहां से हथियार व असलहा लेकर भाग गए जो मेरठ में अपने देश दीवाने क्रांतिकारियों को सौंप दिया। 1881 में गोहाना के पास बलि ब्राह्मण गांव में एक तपस्वी वेदांती साधु से इंद्री छेदन की कठोर शर्त को पूरा कर संन्यासी बने और भीष्म ब्रह्मचारी के नाम से प्रसिद्ध हुए। स्वामी जी को 18-18 घंटे की लम्बी समाधि लगाते लोगों ने देखा। लगभग 37-38 साल की आयु में स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और आर्य समाजी बन गए। स्वामी जी एक कवि और गायक थे लगभग 85 वर्ष स्वामी भीष्म जी ने आर्य समाज के भजनोपदेशक के रूप में काम किया। सन् 1897 में आप दिल्ली बस अड्डे के सामने यमुना किनारे आकर रहने लगे।

1919 में रोलट एक्ट कानून के खिलाफ स्वामी श्रद्धानन्द के साथ विरोध जुलूस में अंग्रेजी संगीनों के सामने सीना तानकर खड़े थे। 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ अमृतसर में सिखों के धर्मयुद्ध में भाग लिया और घायल सिखों की सहायता की। स्वामी भीष्म जी ने 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित शुद्धि सभा जिसका काम हिन्दू से मुस्लिम बने भाई-बहनों को पुन: हिन्दू धर्म में शामिल करना था इस सभा में बड़ी कठिन परिस्थितियों में जान जोखिम में डाल कर 5 वर्षों तक काम किया इस दौरान वो मुसलमान बनकर मस्जिदों में जाते उनकी हिंदुओं को मुस्लिम बनाने की गुप्त योजनाओं का पता लगाकर उनसे पहले ही हिंदुओं को मुस्लिम बनने से बचते या जो मुस्लिम बन चुके उन्हें पुन: हिन्दू बनाने का काम किया। 1927 में हिंडन नदी के किनारे जंगल में आकर (करेहड़ा जिला गाजियाबाद के जंगल में) रहने लगे स्वामी जी का यह आश्रम नाम मात्र की संस्कृत पाठशाला थी किन्तु वास्तव में यह देशभक्त क्रांतिकारियों के छुपने का अड्डा था।

1917 में स्वामी भीष्म जी महाराज के लम्बे प्रयास के बाद प्रथम बार अखिल भारतीय पांचाल ब्राह्मण महासभा का गठन हुआ इसी सभा का एक अधिवेशन 1929 में स्वामी जी के करेहड़ा आश्रम में ही हुआ। स्वामी भीष्म जी द्वारा संस्थापित इस संस्था के अथक प्रयास से 1930 में पहली बार सरकारी गजट में लोहार जाति के लिए पांचाल ब्राह्मण शब्द सम्मान पूर्वक लिखा गया। स्वामी भीष्म जी ने लोहार जाति जिसको उस समय तथाकथित ब्राह्मण व अन्य शुद्र अथवा कमीन कहा करते उनसे लगभग 17 बार विभिन्न स्थानों पर शास्त्रार्थ करके सिद्ध किया कि सभी विश्वकर्मा वंशी शुद्ध और श्रेष्ठ पांचाल ब्राह्मण हैं। इस विषय पर स्वामी जी ने पांचाल ब्राह्मण प्रकाश 1932, पांचाल ब्राह्मण दीपिका, शिल्पी ब्राह्मण, पांचाल परिचय, महर्षि विश्वकर्मा, विश्वकर्मा दर्शन भाग एक व भाग दो तथा पांचाल ब्राह्मण गोत्रवली आदि पुस्तकें लिखकर समाज को जगाने का काम किया। स्वामी भीष्म जी महाराज ने अपने जीवन में 85 सफल और प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक शिष्य तैयार किये, लगभग 228 पुस्तकें लिखी जिनमें से लगभग 125 पुस्तकें आज भी उपलब्ध हैं। स्वामी जी के शिष्यों की सूची बहुत लम्बी हैं डॉ. राम मनोहर लोहिया, स्वामी रामेश्वरनन्द, मनीराम बागड़ी, बीपी मौर्य, रामचन्द्र जी विकल, ज्ञानी जैल सिंह, चरण सिंह व लाल बहादुर शास्त्री आदि अनेक राष्ट्रीय स्तर के नेता स्वामी जी के शिष्य रहे हैं।

स्वामी भीष्म जी की देश के प्रति सेवाओं को देखते हुए 1981 में कुरुक्षेत्र में सार्वजनिक अभिनंदन किया गया जिसमे चौधरी भजन लाल का पूरा मंत्रिमंडल और केंद्र से तत्कालीन गृहमंत्री ज्ञानी जैल सिंह सहित अनेको मंत्री व कई राज्यों के राज्यपाल आदि स्वामी जी का सम्मान करने पहुंचे थे। जुलाई 1983 में कलकत्ता के अंदर स्वामी जी का सार्वजनिक अभिनंदन सदन हाल में बड़े शानदार तरीके से किया गया। 1983 में ही राष्ट्रपति बनने के बाद ज्ञानी जैल सिंह जी स्वामी जी के निमंत्रण पर पांचाल ब्राह्मण धर्मशाला पांडु पिंडारा जींद में भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति स्थापना हेतु पधारे। 1980 अमेरिका में एक गोष्ठी में वेद प्रकाश बटुक ने स्वामी भीष्म जी के कार्यों पर एक निबंध पढ़ा और उनके देश के प्रति किये कार्यों की चर्चा की। 8 जनवरी 1984 में स्वामी भीष्म जी महाराज का शरीरांत हुआ।

सूचना

आर्यसमाज बी-69, सेक्टर 33, नोएडा में आर्यों के लिए वानप्रस्थाश्रम में साधना करने के इच्छुक निवास के लिए कमरे उपलब्ध हैं, कृपया कार्यालय से संपर्क करें। फोन नं.- 0120-2505731

■ आर्य कै. अशोक गुलाटी
उप प्रधान

VEDIC WOMEN AND HER ELEVATED POSITION IN THE SOCIETY

Article by- Y. K. Wadhwa

Vedic tradition recognises women as more relevant for sustaining the society. Vedas talk about her rare virtues. Rig Veda (6.61.4) says 'Pra no devi Saraswati, vejeybhriva jinivati. dhinamavitra yuvatu' i..e, The goddess of learning (Saraswati), endowed with divine virtues, powerful and protector of intelligence, may protect us by bestowing strength on us. Atharvaveda describes her as the symbol of religion or truthful behaviour. Maharishi Manu says in Manusmriti (2.145) that the rank of one acharya (principal) is equal to 10 ordinary teachers, the rank of one father is equal to that of 100 acharyas. The rank of one mother is equal to that of 1000 fathers. Why did Manu give such a high position to mother who is a woman? Just because a learned mother inculcates in her children good sanskars and education as a first Guru. These thoughts go deep into the mind of the child forming his attitude and values of the later age. Manusmriti (3-53) also declares 'Yatra naryastu pujyantey ramantey tatra devata' i.e., Wherever women are honoured, there is heaven (abode of gods) and where they are not, there all activities fail.

INFERIOR POSITION OF WOMEN DURING POST MAHABHARATA PERIOD Inspite of sublime and elevated position of women in the Vedic age, during the post Mahabharata period, the womenhood of India was neglected, disregarded and cribbed. Right of women and shudras to have Vedic education became a vexed problem, so much so even Acharya Shankara opposed it. Orthodoxy fabricated a line in the name of the Vedas and said 'Istri Shudro Nathiatam', i.e., women and shudras are not to study the Vedas. They are not to be taught was the favourite formula of the then so called custodians of Vedic teachings. Reading of Vedas was considered as an offence and hence they were stopped from studying Sanskrit and Vedic texts. She had a very inferior position in the household especially till the end of 19th century. She was cabined and had to remain in Purdah, to cover her face with a long veil. Knowledge was not considered necessary for women. Out of hundreds of thousands of Pathshalas, not a single one was meant for women who were kept confined to the four walls of the house during the degenerated Hindu period which was at its worst during medieval times.

SWAMI DAYANAND AND WOMEN'S RIGHT TO VEDIC EDUCATION. Swami Dayanand, a great reformer of 19th century and founder of Arya Samaj was shocked at this condition of womanhood. Swamiji went deep into the Vedic studies and found that this inferiority of the female was not sanctioned by the Vedas and during Vedic times women enjoyed a very respectable position in the society. The orthodoxy opposed tooth and nail when Swami Dayanand started his crusade to preach the true values of the Vedic teaching about equality of men and women for all purposes, whether in respect of marriage, inheritence or other educational rights. In his book Satyartha Prakash, while countering the prevailing negative views about education of women, Swami Dayanand strongly pleaded on the authority of Yajurveda 26.2 which says "Yathemam vacham kalyanim avadani janebhyah.

ऋषिवर दयानन्द

ऋषि दयानन्द भारत सपूत, मां के गौरव हे तपः धूत।
तप, ज्ञान, तेज का था वैभव, जिनके अंतरतम में प्रभूत।
जब फैला चहुं अज्ञान, द्वेष, पाखंड, अंध-विश्वास क्लेश।
ऐसे में तुम अवतीर्ण हुए, लेकर अमृतमय वाणी शेष।।

अज्ञान रूप आच्छन्न मेघ, जया को करते निस्तेज शेष।
तब प्रखर रश्मियों को विकर्ण, कर उदित हुए बनकर 'दिनेश'।
दलितों का कर उद्धार उन्हें, जीने का दिया अधिकार उन्हें।
नारी शिक्षा का कर प्रचार, मेरी तम की कालुष्यधार।।

तुम बने 'सारथी' राष्ट्रदूत, हे दयानन्द भारत सपूत।
वेदों का करके नवोन्मेष, जन-मानस को करके सचेत।
संस्कृति का फिर उत्थान किया, भारत को गुरुपद मान दिया।
मूलशंकर ने शंकर को समझा, अभ्यंतर के स्वर को समझा।।

उस महालक्ष्य की प्राप्ति हेतु, त्यागे सारे सुख-साज सेतु।
बनकर ही 'शंकर' गरल पिया, जग हित अर्पित जीवन सकल किया।
मनसा, वाचा, हे कर्मपूत, हे दयानन्द भारत सपूत।।

➲ डॉ. अर्पणा पाण्डेय

मौसम में यौवन चढ़ रहा

शीत, बरखा, बसंत, ठंडी झोंकों का एहसास लिए
एक ही मौसम में, मिठास भर एक संग चल रहा है
रवि की रश्मि किरणें अपने अंग का ताप दबाये
जीवन में शीतलता, सुकून और आनंद का रंग भर रहा है
अम्बर में प्रभाकर शीतल कोमल चन्द्र बदन लिए
बादलों की चादरों संग आँख मिचोली का खेल खेल रहा है

तरु धरा घास वन जंगल, पुष्प मंजरी से बिखरा सजा
प्रकृति सौंदर्य मन को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है
नदियाँ झरने अपनी मौज में नाच खेल रहे

मौसम के रंग बदलने से सारी सृष्टी में निखार बढ़ रहा है
धरती से आसमान तक सबकी चाल ढाल बदली बदली
देख के लग रहा जैसे मौसम में यौवन चढ़ रहा है

➲ डा. सरिता चंद्रा, फाउंडर-सुमेर सिंह आर्य संस्थान, छ.ग.

ऋषि महिमा

ऋषि दयानन्द स्वामी जग में सब महापुरुषों से न्यारे थे
वे तो मानवधर्म के रक्षक थे, वसुधैव कुटुम्ब विचारे थे
सम्पूर्ण देश में घूमधाम, नगरी मथुरा में पधारे थे
जहां प्रजाचक्षु व्याकरण सूर्य श्री विरजानन्द गुरु धारे थे

विद्याध्ययन में सर्वोत्तम ये, गुरु के शिष्य वे प्यारे थे
'गुरुदक्षिणा' में जीवन अर्पण कर, गुरु आज्ञा शिरोधारे थे
सत्य अहिंसा के प्रचार में, न्याय रूप उजियारे थे
परमेश्वर ने जो वेद श्रुति दी, उस पर गए बलिहारे थे

ब्रह्मचारी योगी अखण्ड थे, नहीं किसी से हारे थे
ईंटें और पत्थर खाकर भी, पाखंड खंडन ना विसारे थे
संस्कृत में थे सूर्य समान वे, हिन्दी प्रचार मतवारे थे
वेदों के भाषा भाष्य सृजन से चमत्कार कर डारे थे

नारी उत्थान, चरित्र निर्माण, जीवन शिक्षा से संवारे थे
सती प्रथा व बाल विवाह जैसी सब कुरीतियां मेटन हारे थे
'आर्यसमाज' की पौध रोपकर, अज्ञान तिमिर को मारे थे
'आजादी' की बलिवेदी पर, कितनों ने ही प्राण निसारे थे

छुआछूत को दूर भगा, जाति एक मनुष्य उच्चारे थे
वे तो क्षमा-दया के सागर थे कातिल के भी रखवारे थे
मन से, वचनों से और कर्मों से सदा रहे इकसारे थे
तुम धन्य-धन्य हो दयानन्द, जिन लाखों जीवन तारे थे
ऋषि दयानन्द स्वामी जग में सब महापुरुषों से न्यारे थे!!

➲ विनोद प्रकाश 'गुप्त'

ऋषिबोध दिवस हमें बोध प्रदान कर मंगलमय हो

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन का ध्येय था मोक्ष को प्राप्त करना। यह मोक्ष धन मनुष्य को प्राप्त होने वाला सर्वोत्तम धन है। इस धन के अभिलाषी दयानन्द सरस्वती अपने पूर्व जन्मों से भी अपने इस ध्येय के अनुकूल संस्कारों का कोष लेकर आये थे और उन्होंने वर्तमान जन्म में भी उन्हीं संस्कारों के अनुसार तीव्र गति से अपने ध्येय की ओर बढ़ना आरम्भ कर दिया था।

ऐसा विशिष्ट मानव अपने लक्ष्य के विपरीत इस संसार रूप सागर में उठती हुई लहरों के थपेड़ों से कभी विचलित नहीं होता है क्योंकि उसने तप के द्वारा उस शक्ति का संग्रह कर लिया होता है कि जो शक्ति संसार की इन विपरीत तरंगों से, जो कि उसके लक्ष्य में बाधक हैं, उनसे टक्कर लेकर उन्हें प्रबल धक्के से दूर धकेलती हुई इसे आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर सके।

ऐसा मानव अपने स्वभाव की दिशा को तो पहले ही बदल चुका होता है, इसलिये उसके पास अपने लक्ष्य से भटकाने वाले किसी प्रतिकूल संस्कार का भी दूर-दूर तक नामोनिशान नहीं होता है। वह अपने इस जीवन में भी लक्ष्य का निर्धारण प्रभु की कृपा से स्वयमेव कर लेता है क्योंकि उसके जीवन का लक्ष्यानुसारी निर्माण इस वर्तमान जीवन में ही आरम्भ नहीं हो रहा है अपितु उसके उज्ज्वल जीवन का निर्माण पहले से होकर आया है।

अहो! इसी कारण से फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी के दिवस ऋषिवर के जीवन में वह कैसी विचित्र घटना घटी कि उस दिन टंकारा के शिवमंदिर के दृश्य ने जिसमें कि अचेतन प्रतिमाओं पर चढ़ाये गये पदार्थों को चूहे खा रहे थे उनके पूर्वजन्म की संस्कार-माला का चित्र, उस घटना से विस्मित होकर अंतर्ध्यान होते ही उनके मन के चित्रपट पर अविकल खींच दिया।

प्रभु की कृपा से व्यवस्थानुसार ऋषिवर के संस्कार जग गये, ध्येय सामने आ गया और तत्काल ही वर्तमान के कार्यक्रम का सूत्रपात हो गया। यह सूत्रपात क्या था? यह सूत्रपात एक साधारण विचारधारा का प्रकाश मात्र ही न था अपितु यह एक अवश्यम्भावी कार्यक्रम का उपक्रम था। इस कार्यक्रम का ध्येय था-प्रभु दर्शन, जो कर्तव्य के रूप में बनकर पूर्वजन्म से ही संस्कार के रूप में आया था।

आदर्श महापुरुषों के जीवन की यह सबसे बड़ी विशेषता होती है कि वे ध्येय व उसको सिद्ध करने के कार्यक्रम का तत्काल ही निर्णय कर लेते हैं तथा तीव्र गति से उस कार्यक्रम का अनुष्ठान भी आरम्भ कर देते हैं। योगिराज स्वामी आत्मानन्द सरस्वती ने ऐसे महापुरुषों के लिये अथर्ववेद के एक मंत्र का अर्थ इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

'यो वै ते विद्यादरणी याभ्यां निर्मथ्यते वसु। स विद्वान् ज्येष्ठं मन्येत स विद्याद् ब्राह्मणं महत्॥'

जो मनुष्य उन दो अरणियों को (ज्ञान और तप को) जानता है,जिनके मन्थन से सबको बसाने वाले भगवान् का मन्थन किया जाता है, वह ही विद्वान् उस ज्येष्ठ ब्रह्म का मनन करता है और वह ही उस सबसे महान् ब्रह्म तत्व को जानता है।

'अथर्ववेद में वर्णित ज्ञान व तप नामक ये दोनों अरणियां महर्षि दयानन्द सरस्वती के हाथ में था। ज्ञान तो उन्हें अपनी पूर्व संचित सामग्री के रूप में प्राप्त हो गया था, इसमें जो कुछ विस्मरण का आवरण था उसे प्रभु की कृपा ने उस व्रत के दिन अंतर्ध्यान होते ही हटा दिया। अहो! अब उनके सामने अपने संस्कार रूप ज्ञान के प्रकट होते ही, इससे आगे का उनके जीवन का सारा ही कार्यक्रम एक कठोर उग्रतप की विचित्र झांकी है।

उनके जीवन-चरित्र में इस विचित्र झांकी के दर्शन होते हैं। इन ज्ञान व तप के द्वारा जिस आत्मा में ब्रह्म की शक्तियों का विकास हो जाता है, वह उसी ब्रह्म से प्रेरित होकर लोक कल्याण के कार्यों में लग जाता है। ब्रह्म प्राप्त होने के अनंतर ऋषि के जीवन का सारा ही दृश्य ऐसा है। इस दृश्य से अभिभूत आर्यजन फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी के दिन ऋषिबोध पर्व मनाते हैं।

आज के दिन एक घटना से विस्मित होकर अंतर्हित हुए महर्षि को अपने अंत:करण में विराजमान, परन्तु कुछ ओझल ईश्वर प्राप्ति की प्रबल अभिलाषा का बोध हुआ था और उस दिन ही हम भी किसी अन्य विशेष घटना से नहीं, अपितु बोध की ही इस विचित्र घटना से बोध प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसा करके हम उनके आदर्श जीवन के अनुगामी बनकर अभ्युदय व मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी बन सकते हैं।

■■ आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी

घोषणा (फार्म नं.4) नियम-8

1.	समाचार पत्र का नाम	:	विश्ववारा संस्कृति
2.	प्रकाशन का स्थान	:	आर्यसमाज, बी–69, सेक्टर–33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर, उ.प्र.
3.	प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
4.	मुद्रणालय का नाम व पता	:	वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाउस, सी–ब्लॉक, बारातघर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर–22, नोएडा, गौतमबुद्धनगर, उ.प्र.
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
5.	स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक	:	डॉ. जयेन्द्र कुमार
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	आर्यसमाज, बी–69, सेक्टर–33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर, उ.प्र.
6.	सम्पादक	:	डॉ. जयेन्द्र कुमार
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	आर्यसमाज, बी–69, सेक्टर–33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर, उ.प्र.

मैं डॉ. जयेन्द्र कुमार एतद्द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

(डॉ. जयेन्द्र कुमार)
सम्पादक

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा

आर्य समाज नोएडा का प्रकल्प

प्रवेश-सूचना

गुरुकुल में नवीन सत्र 2021-22 के लिए मई 2021 में प्रवेश आरम्भ हो रहे हैं। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी की आयु 10 वर्ष (5वीं पास) होना चाहिए। पाठ्यक्रम गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार एवं उ.प्र.मा.सं.शि. परिषद, लखनऊ से सम्बन्धित होगा। आवासीय गुरुकुलीय दिनचर्या, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आसन, प्राणायाम, व्यायाम, खेलकूद तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन, गाय के दूध की व्यवस्था।

प्रवेश शुल्क : 5100/- रु., भोजन शुल्क : 1500/- रु. प्रतिमाह, शिक्षा निःशुल्क

विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश पत्र प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-
सम्पर्क सूत्र : 0120-2505731, 9899349304, 9871798221

लिखित परीक्षा : 30 मई 2021, प्रातः - 10 बजे

पिछली पास कक्षा का व आयु का प्रमाण पत्र, 2 फोटो एवं स्वास्थ्य प्रमाणपत्र साथ लाएं

सिफारिश को अयोग्यता माना जायेगा

साक्षात्कार लिखित परीक्षाएं उत्तीर्ण होने पर होगा

समाचार - सूचनाएं

- 3 मार्च रक्तसाक्षी पं. लेखराम आर्य बलिदान दिवस।
- 8 मार्च युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव।
- 8 मार्च अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस।
- 10 मार्च वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द देहांत।
- 11 मार्च ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि)।
- 19 मार्च पं. गुरुदत्त विद्यार्थी पुण्यतिथि।
- 22 मार्च विश्व जल दिवस।
- 23 मार्च शहीदी दिवस अमर शहीद स. भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव थापर बलिदान दिवस।
- 28-29 मार्च होली होल्कोत्सव।

चुनाव सूचना

समस्त सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा की वार्षिक साधारण सभा एवं चुनाव वर्ष 2021-22 के लिए चुनाव अधिकारी डा. वीरपाल विद्यालंकार द्वारा रविवार 11 अप्रैल, 2021 निश्चित की गई है। सभी मान्य वैध सदस्य अधिक जानकारी के लिए कार्यालय से सम्पर्क करें।

■ **आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा**

समस्त सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं.), बी-69, सेक्टर-33, नोएडा की वार्षिक साधारण सभा एवं चुनाव वर्ष 2021-22 के लिए चुनाव अधिकारी डा. वीरपाल विद्यालंकार द्वारा रविवार 11 अप्रैल, 2021 निश्चित की गई है। सभी मान्य वैध सदस्य अधिक जानकारी के लिए कार्यालय से सम्पर्क करें।

■ **आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति, (पंजी.)**

विनम्र श्रद्धांजलि

सरल सौम्य मन उन्नत भाल,
सत्य ज्ञान की जलती मशाल।
धैर्य धर्म की सुंदर प्रतिमा आप,
जीवन में समाया ओउम का जाप।
वैदिक शुभकर्मों की दिव्य धारा,
बिन रुके चमकाया जग सारा।

पा प्रेरणा बहुतों ने विलास त्यागे,
उपकार में तेरे शिष्य रहे आगे।
सब करें नमन तुझे बार-बार,
बस भेंट चढ़ाएं निज अश्रु हार।
हे महाभाव परिव्राजक सत्यपति,
निश्चय प्रभु गोद की मिले गति।।

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक का पिछले दिनों निधन हो गया था। आर्य समाज नोएडा को उनका सानिध्य प्राप्त करने का अवसर मिला। आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

हम समस्त भारतवासी 7 फरवरी 2021 को देवभूमि उत्तराखंड के चमोली क्षेत्र में ग्लेशियर टूटने से आई प्राकृतिक आपदा स्वरूप स्वर्गवासी हुए समस्त पावनआत्माओं के प्रति अपने श्रद्धासुमन व विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परम पिता परमेश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि उन समस्त स्वर्गवासी पावनआत्माओं को सद्गदि प्रदान करें व शोक संतप्त परिवारजनों को इस महान दुःख एवं शोक को सहन करने की सामर्थ्य प्रदान करें : ओ३म् शांति-शांति-शाति!!

पाठक के पत्र

■ **आदरणीय प्रबंध संपादक महोदय!** 'विश्ववारा संस्कृति' ज्ञानवर्धक पत्रिका। मैं आपकी बहुमुखी प्रतिभा से बहुत प्रभावित हूं। आप इसी प्रकार समाज सेवा करते रहें। आपका बहुत सुंदर प्रयास है, ईश्वर आपको उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करते हुए इस सुंदर कार्य को और उन्नति की ओर प्रेरित करें और अपने उद्देश्य में निरन्तर अग्रसर रहें। **बहुत-बहुत धन्यवाद!!** - **विभा कपूर**

विधि का विधान

महापुरुष श्रीराम जी का विवाह और राज्याभिषेक दोनों शुभ मुहूर्त देख कर ही किया गया था, फिर भी न वैवाहिक जीवन सफल हुआ और ना ही राज्याभिषेक। और जब मुनि वशिष्ठ से इसका जवाब मांगा गया तो उन्होंने साफ कह दिया-सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेहु मुनिनाथ। लाभ-हानि जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ। अर्थात, जो विधि ने निर्धारित किया है वही होकर रहेगा। ना महापुरुष श्रीराम जी के जीवन को बदला जा सका और ना ही योगेश्वर श्रीकृष्ण के। ना ही शिवशंकर, सती की मृत्यु को टाल सके, जबकि महामृत्युंजय मंत्र उन्हीं का आह्वान करता है। ना श्री गुरु अर्जुन देव जी, ना श्री गुरु तेग बहादुर जी और ना ही दशमेश पिता श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी अपने साथ होने वाले विधि के विधान को टाल सके, जबकि आप सब समर्थ थे। रामकृष्ण परमहंस जी भी अपने कैंसर को ना टाल सके। ना रावण अपने जीवन को बदल पाया और ना ही कंस, जबकि दोनों के पास समस्त शक्तियां थीं। मानव अपने जन्म के साथ ही जीवन, मरण, यश, अपयश, लाभ, हानि, स्वास्थ्य, बीमारी, देह, रंग, परिवार, समाज, देश और स्थान सब पहले से ही निर्धारित करके आता है। इसलिए सरल रहें, सहज रहें, मन कर्म और वचन से सद्कर्म में लीन रहें।

ओ३म्...ओ३म्...ओ३म्

शुल्क सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।

आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद! कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2019 को समाप्त हो गया है, फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ **प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734**

2021

विक्रमी संवत् 2077-78
सृष्टि संवत् 1960853121-22

पौष — जनवरी — माघ

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

माघ — फरवरी — फाल्गुन

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

फाल्गुन — मार्च — चैत्र

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

चैत्र — अप्रैल — वैशाख

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

वैशाख — मई — ज्येष्ठ

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

ज्येष्ठ — जून — आषाढ़

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

जनवरी
13 लोहड़ी
14 मकर संक्रान्ति
26 गणतन्त्र दिवस
फरवरी
16 वसन्त पञ्चमी
27 रविदास जयंती
मार्च
8 महर्षि दयानन्द जन्मदिवस
11 महाशिवरात्रि व
महर्षि दयानन्द बोध दिवस
28 होली
29 दुल्हण्डी
अप्रैल
2 गुड फ्राइडे
13 वैशाखी, नवसंवत्सर एवं
आर्यसमाज स्थापना दिवस
14 अम्बेडकर जयंती
19 महात्मा हंसराज जयंती
21 श्रीराम नवमी
25 महावीर जयंती
मई
1 मई दिवस
14 ईद उल फितर
26 बुद्ध पूर्णिमा
जून
21 अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस
जुलाई
21 इद-उल जुहा
अगस्त
15 स्वतन्त्रता दिवस
20 मोहर्रम
22 रक्षा बन्धन
22-30 अगस्त वेद प्रचार सप्ताह
30 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
सितम्बर
10 गणेश चतुर्थी
19 अनन्त चौदस
अक्टूबर
2 गांधी व लालबहादुर शास्त्री जयंती
15 दशहरा
20 वाल्मीकि जयंती
20 ईद-ए-मिलाद
नवम्बर
4 दीपावली व
महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस
5 गोवर्धन पूजा
6 भैया दूज
19 गुरु नानक जयंती
दिसम्बर
23 स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
25 क्रिसमस डे
(सही अवकाश के लिए सरकारी गजट से मिलायें)

आर्य प्रकाशन

दूरभाष- +91-11-23233[illegible] चलभाष- +91-9868[illegible]
e-mail: aryaprakashan@gmail.com

आषाढ़ — जुलाई — श्रावण

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

श्रावण — अगस्त — भाद्रपद

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

भाद्रपद — सितम्बर — आश्विन

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

आश्विन — अक्टूबर — कार्तिक

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

कार्तिक — नवम्बर — मार्गशीर्ष

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

दिसम्बर — पौष

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

सुस्वास्थ्य

मानसिक रोग का कारण बन रहा अकेलापन

अकेलेपन की वजह से मानसिक रूप से बीमार होने का खतरा काफी बढ़ जाता है। कई अध्ययनों में यह बात साबित हुई है कि बहुत दिनों तक अकेले रहने से लोग साइकोसिस जैसी गंभीर मानसिक बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं। 10 से 12 साल तक के बच्चे भी पढ़ाई को लेकर मानसिक तनाव में आ रहे हैं। इस तनाव को बढ़ावा दे रहा है अकेलापन। इसके चलते लोग आत्महत्या जैसे कदम उठा रहे हैं या फिर ड्रग की चपेट में आ रहे हैं।

स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों मुताबिक वर्ष 2018 के अप्रैल माह से लेकर वर्ष 2019 तक मानसिक तनाव के 12,061 मामले सामने आ चुके हैं। इनमें लोग अलग-अलग कारणों से मानसिक तनाव में पाए गए हैं। काउंसिलिंग में सामने आया है कि 20 से 40 साल तक के लोग सबसे ज्यादा मानसिक तनाव में हैं और आत्महत्या करने जैसे कदम उठाने की सोचते हैं।

क्या है स्थिति

- वर्ष 2006 में स्तन कैंसर की शिकार 2800 महिलाओं पर किए गए एक अध्ययन से पता चला कि ऐसी मरीज जो तुलनात्मक रूप से परिवार या दोस्तों से कम मिलते थे, उनकी बीमारी से मौत की आशंका पांच गुना ज्यादा थी।
- शिकागो विश्वविद्यालय में मनोवैज्ञानिकों ने देखा कि समाजिक रूप से अलग - थलग लोगों की प्रतिरोधक क्षमता में बदलाव हो जाता है। ये बदलाव उन्हें स्थायी सूजन और जलन की ओर धकेलता था।
- किसी घाव संक्रमण के ठीक होने के लिए अल्पकालिक सूजन और जलन जरूरी होती है। लेकिन वह लंबे वक्त तक रहती है तो हृदयवाहिनी के रोग और कैंसर की वजह बन सकती है।

आत्महत्या के संकेत

- जिंदगी में अनावश्यक जोखिम उठाना
- अचानक मृत्यु की तैयारी करना
- मिजाज में भारी परिवर्तन
- आदतों में परिवर्तन
- अपनों से कटे रहना या दूरी बनाना
- नींद और वजन में परिवर्तन
- शराब या नशे में बढ़ोतरी

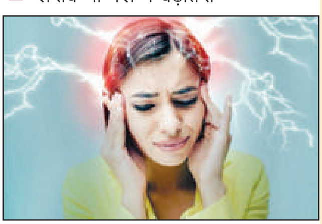

क्या है उपचार

- ऐसे व्यक्ति को गंभीरता से ले सकते हैं
- ऐसे व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुनें
- भावनाओं की कद्र करें
- विश्वास दिलवाएं की समस्याएं अस्थाई हैं एवं निदान संभव है
- अकेलेपन को कैसे दूर करें
- दोस्तों और परिवारों से मुलाकात करें
- बाहर निकलें और हैलो हाय करें
- अपने लोगों को तलाशें
- पेट्स रखना शुरू करें

मानसिक रोग क्या है : जब एक व्यक्ति ठीक से सोच नहीं पाता, उसका अपनी भावनाओं और व्यवहार पर काबू नहीं रहता, तो ऐसी हालत को मानसिक रोग कहते हैं। मानसिक रोगी आसानी से दूसरों को समझ नहीं पाता और उसे रोजमर्रा के काम ठीक से करने में मुश्किल होती है। मानसिक रोग के लक्षण, हर व्यक्ति में अलग-अलग हो सकते हैं। ये इस बात पर निर्भर करते हैं कि उसे कौन-सी मानसिक बीमारी है। मानसिक रोग किसी को भी हो सकता है, फिर चाहे वह आदमी हो या औरत, जवान हो या बुजुर्ग, पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़, या चाहे वह किसी भी संस्कृति, जाति, धर्म, या तबके का हो। अगर मानसिक रोगी अच्छी तरह अपना इलाज करवाए, तो वह ठीक हो सकता है। वह एक अच्छी और खुशहाल जिंदगी जी सकता है। लेकिन ज्यादातर केस में लोग काउंसलिंग करवाने से डरते हैं कि लोग उन्हें पागल समझेंगे और समस्या बढ़ जाती है।

सकारात्मक पहलू

अकेला होना एक सकारात्मक, सुखद और भावनात्मक रूप से तरोताजा करने वाला अनुभव हो सकता है। अकेला होने और अन्य लोगों से परे रहने की अवस्था एकांत है और अक्सर इसका अर्थ अपनी इच्छा से अकेले होना है वर्ष 1665 में आइजक न्यूटन कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में थे। उस समय महामारी के कारण कैम्ब्रिज बंद हो गया था। वहां किसी को कुछ भी करने की अनुमति नहीं थी इसलिए न्यूटन अकेले अपने छात्रावास में रहे। इस बीच वह खगोल भौतिकी की एक समस्या से घिर गए। इस समस्या को हल करने के लिए उन्होंने उस अकेलेपन के दो साल में कैलकुलस, न्यूटन के तीन नियम, सार्वभौमिक कानून के गुरुत्वाकर्षण, अपने काम की प्रकाशिकी की जांच करने के लिए टेलीस्कोप को प्रतिबिंबित करने जैसे कई बड़े कार्य किए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वार्षिक साधारण अधिवेशन में पुनः प्रधान चुने जाने पर आर्य रत्न, माननीय डॉ. पूनम सूरी जी प्रधान डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी, प्रधान टंकारा ट्रस्ट को बधाई देते आर्य कैप्टन अशोक गुलाटी साथ में नव निर्वाचित मंत्री श्री अजय सहगल जी।

माता चन्द्रावती आर्ष कन्या गुरुकुल कासगंज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आचार्या, डॉ. सूर्यदेवी चतुर्वेदा, डॉ. धारणा, स्थानीय विधायक महोदय, ब्रह्मचारियां, डॉ. धनंजय, ब्र. नीरज आर्य और नोएडा आर्य समाज के उप प्रधान आर्य कैप्टन अशोक गुलाटी व श्रद्धालुजन।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022 Date of Dispatch 12 Every Month

योगीराज महर्षि स्वामी दयानन्द जी के प्रेरणादायी छाया चित्र

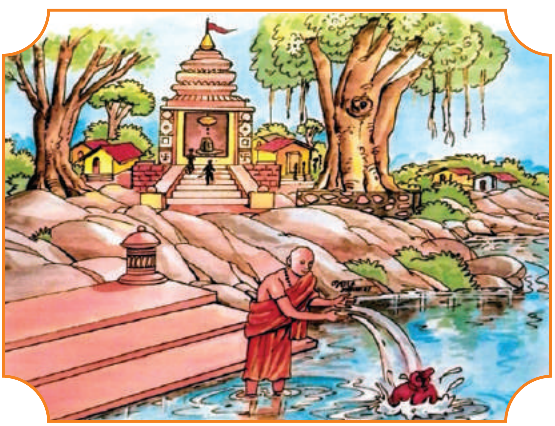

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221